Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوۡا مَا بَقِىَ مِنَ الرِّبٰٓوا اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ ○ فَاِنۡ لَّمۡ تَفۡعَلُوۡا فَاۡذَنُوۡا بِحَرۡبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوۡلِهٖ ۚ

(सूरतुल बक़रा आयत :279.280)

अनुवाद: हे वे लोगों जो ईमान लाए हो अल्लाह से डरो और छोड़ दो जो सूद में बाकी रह गया है अगर तुम वास्तव में मोमिन हो। और अगर तुम ने इस प्रकार ने किया तो अल्लाह और उस के रसूल की तरफ से जंग का एलान सुन लो।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ   نَحۡمَدُهٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِهِ الۡكَرِيۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِهِ الۡمَسِيۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ

वर्ष 3

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly
BADAR Qadian
HINDI

अंक 46-47

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

6-13 रबीयुल अव्वल 1439 हिजरी कमरी 22-15 नबुव्वत 1397 हिजरी शमसी 15-22 नवम्बर 2018 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि कश्ती नूह में हमारी शिक्षा का जो भाग है वह ज़रूर हर अहमदी को पढ़ना चाहिए बल्कि पूरी कश्ती नूह ही पढ़ें।

मुसलमानों के लिए सहीह बुख़ारी बहुत अधिक बरकत वाली और लाभदायक किताब है यह वही किताब न होगा जिस में साफ तौर पर लिखा है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम वफात पा गए हैं। इसी प्रकार मुस्लिम की और दूसरी हदीस की किताबें बहुत एस मआरिफ तथा मसलों का भंडार अपने अन्दर रखते हैं इस सावधानी से इन पर अनुकरण वाजिब है कि कोई विषय इस प्रकार का न हो जो कुरआन और सुन्नत और उन हदीसों से जो कुरआन के अनुसार हैं।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

ऐसी सैकड़ों हदीसें हैं जिन में भविष्यवाणी हैं और हदीस के विद्वानों के निकट उनमें से अधिकांश कमज़ोर, बनावटी या तर्क-वितर्क वाली हैं। अत: यदि कोई हदीस उनमें से पूरी हो जाए और तुम यह कहकर टाल दो कि हम इस को नहीं मानते क्योंकि यह हदीस कमज़ोर है या उसको बयान करने वाला पवित्र आचरण वाला नहीं है। तो ऐसी स्थिति में तुम्हारी स्वयं बेईमानी होगी कि ऐसी हदीस को रद्द कर दो जिसकी सच्चाई को ख़ुदा ने सिद्ध कर दिया है। विचार करो यदि ऐसी हज़ार हदीसें हों और हदीस के विद्वानों के निकट कमज़ोर हों और हज़ार भविष्यवाणियां उसकी सच्ची निकलें तो क्या तुम उन हदीसों को कमज़ोर कहकर इस्लाम के हज़ार प्रमाणों को नष्ट कर दोगे। अत: ऐसी स्थिति में तुम इस्लाम के शत्रु ठहराए जाओगे। ख़ुदा का कथन है-

فَلَا يُظۡهِرُ عَلٰی غَيۡبِهٖۤ اَحَدًا اِلَّا مَنِ ارۡتَضٰی مِنۡ رَّسُوۡلٍ

(सूरह अलजिन्न-27,28)

"फ़लायुज़हिरो अला गैबिही अहदन इल्ला मनिर्तज़ा मिन रसूल"

अत: सच्ची भविष्यवाणी सच्चे रसूल के अतिरिक्त और किसी की ओर मन्सूब नहीं हो सकती है? क्या ऐसे अवसर पर यह कहना स्थिति के अनुरूप ईमानदारी नहीं कि सही हदीस को कमज़ोर कहने में किसी हदीस के विद्वान ने ग़लती की, या यह कहना उचित है कि झूठी हदीस को सच्चा करके ख़ुदा ने ग़लती की। यदि एक हदीस कमज़ोर भी हो बशर्ते कि वह क़ुर्आन, सुन्नत और ऐसी हदीसों के विपरीत नहीं जो क़ुर्आन के अनुकूल हैं तो उस हदीस पर अमल करो परन्तु बहुत सतर्कता पूर्वक हदीसों पर अमल करना चाहिए क्योंकि बहुत सारी हदीसें लोगों द्वारा बनाई हुई भी हैं जिन्होंने इस्लाम में उपद्रव डाला है। प्रत्येक सम्प्रदाय अपनी आस्थानुसार हदीस रखता है। यहां तक कि नमाज़ जैसे निस्सन्देह और निरंतर चलने वाले कर्तव्य को हदीसों के विवाद ने विभिन्न प्रकार की शक्लों में कर दिया है। कोई आमीन उंची आवाज़ में कहता है तो कोई खामोशी से, कोई इमाम के पीछे सूरह फ़ातिह: पढ़ता है तो कोई इसे नमाज़ को ख़राब करने वाला समझता है। कोई सीने पर हाथ बांधता है कोई नाभि पर। इस विवाद का वास्तविक कारण हदीसें ही हैं।

كُلُّ حِزۡبٍۢ بِمَا لَدَيۡهِمۡ فَرِحُوۡنَ

"कुल्लोहिज़्बिंबिमा लदैहिम फ़रिहून" (मौमिनून-54)

अन्यथा सुन्नत ने एक ही मार्ग बतलाया था। फिर विभिन्न लोगों के कथनों के प्रविष्ट होने से यह मार्ग लड़खड़ा गया। इसी प्रकार हदीसों को न समझने के कारण बहुत सारे लोग तबाह हो गए। शिया भी इसी से तबाह हुए। यदि क़ुर्आन को अपना निर्णायक मानते तो अकेली सूरह नूर ही उन्हें

शेष पृष्ठ 12 पर

124 वां
जलसा सालाना क़ादियान

दिनांक 28, 29, 30 दिसम्बर 2018 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 124 वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 28, 29 और 30 दिसम्बर 2018 ई.(शुक्रवार, शनिवार व रविवार) की स्वीकृति दी है। जमाअत के लोग अभी से इस शुभ जलसा सालाना में उपस्थित होने की नीय्यत करके दुआओं के साथ तैयारी आरम्भ कर दें। अल्लाह तआला हम सब को इस ख़ुदाई जलसे से लाभ उठाने की क्षमता प्रदान करे। इस जलसा सालाना की सफलता व बा-बरकत होने के लिए इसी तरह यह जलसा लोगों के लिए मार्ग दर्शन हो इसके लिए विशेष दुआएँ जारी रखें। धन्यवाद

(नाज़िर इस्लाह व इरशाद मरकज़िया, क़ादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और सवीडन का सफर, मई 2016 ई (अन्तिम भाग-14)

☆ जमाअत अहमदिया स्वीडन की राष्ट्रीय मज्लिस आमला के साथ मुलाकात,

हुज़ूर अनवर ने नमाज़ों में हाज़री के हवाले से फरमाया कि क्या दूरी अधिक है याद करवाते रहा करें। ख़ुत्बों में नमाज़ों के बारे में ध्यान दिलाता रहता हूं। आप का काम है कि ध्यान दिलाते रहा करें। जो दूर घर हैं वहां चार पांच घर मिल कर सेन्टर बना लें नमाज़ पढ़ लिया करें।

ख़ुदा तआला ने फरमाया है कि नसीहत करते जाओ। नसीहत करना तुम्हारा काम है। पुलीस फोर्स बनना हमारा काम नहीं है। उहेदेदार ध्यान दिलाते रहें। नसीहत करने का आदेश है। अतः नसीहत करते जाएं।

व्यक्तिगत और पारिवारिक मुलाकातें, गौथनबर्ग से और लंदन को रवानगी

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

21 मई 2016 (शनिवार) (शेष.......)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया :

इस समय, मैं दो निकाहों की घोषणा करूंगा। निकाह और विवाह जहां लड़कों और लड़कियों के लिए और दो परिवारों के लिए ख़ुशी का अवसर है, वहां यह ज़िम्मेदारियां भी डालता है। इसलिए इन आयतों में जो निकाह के अवसर पर तिलावत की जाती हैं अल्लाह तआला ने बार-बार काम करने पर ध्यान केंद्रित किया है कि तक्वा से काम लो। अपने रिश्तेदारों का अदा करने के लिए तक्वा से काम लो। एक-दूसरे के रिश्तेदारों के अधिकार का अदा करने के लिए तक्वा से काम लो। आपस में विश्वास पैदा करने के लिए तक्वा से काम लो। जो बात भी पति तथा पत्नी करें उस में सच्चाई से काम लें। और सच्चाई की बारीकी तक जाएं क्योंकि यह एक माध्यम है। यदि सच्चाई होगी तो रिश्तों में विश्वास स्थापित हेगा। यदि रिश्तों में भरोसा स्थापित होता तो यह संबंध हमेशा स्थापित रहने वाले होते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : अल्लाह तआला फरमाता है कि तक्वा से काम लो और यह देखो कि तुम ने कल के लिए क्या भेजा है। इस दुनिया में भी नज़र रखो कि तुम्हारे कर्म कैसे हैं। क्या अल्लाह तआला की रज़ा को प्राप्त करने वाले हैं और तुम्हारे भविष्य की जीवन में काम आने वाले हैं। और इस बात पर भी नज़र रखो कि जा औलाद पैदा होनी है जो अगली नस्ल बननी है उस में भी धर्म स्थापित है या नहीं? अगर अपने कर्म इस प्रकार होंगे जो धर्म के अनुसार होंगे धर्म की शिक्षा पर चलने वाले हों तब ही अगली नस्ल पर भी नेक प्रभाव होगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: तो हर आदेश जो इस आयत में दिया गया है जिसका खुलासा मैंने वर्णन कर दिया है इसमें अल्लाह तआला ने केवल ख़ुशी मनाने का आदेश नहीं दिया बल्कि इस ख़ुशी में अपनी ज़िम्मेदारियों को समझने और उन्हें निभाने पर ध्यान दिलाया है। तो यदि ये बातें रहें तो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल के साथ रिश्ते हमेशा चलने वाले होते हैं और अगली पीढ़ी भी नेक और सालेह होती है। और यही एक मोमिन का काम है कि अपने आप को धर्म के साथ ख़ुद को जोड़े और अपनी पीढ़ियों को धर्म से जोड़े बजाय इस के कि सांसारिक इच्छाओं की तरफ अधिक चलें, बजाए इस के कि लड़की की तरफ से मांग हो या बजाए इस कि के लड़का यह कहे कि लड़की की सुन्दरता या हुस्तन मेरे स्तर की नहीं है। क्योंकि कभी-कभी विवाह के बाद भी इस को व्यक्त किया जाता है। अत: ये चीज़ें देखने वाली नहीं हैं। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जिस बात पर ध्यान देने के लिए कहा है वह है लड़की का धर्म देखो। और धर्म देखने के लिए यह आवश्यक है कि लड़का भी नेक हो। तो दोनों पक्षों की जिम्मेदारियां हैं। यदि धर्म पर नज़र होगी तो अल्लाह तआला के आदेशों की भी ओर भी देखेंगे, और आदेशों पर नज़र होगी तो इस उद्देश्य को प्राप्त करने वाले होंगे जो हमारे जीवन का है। और अगली नस्लों को लिए भी अच्छी दुनिया छोड़कर जाने वाले होंगे। दुनिया केवल संपत्ति और सुविधा और रामा नहीं है। सफलता तब मिलती है जब इस दुनिया में भी दिल की शान्ति प्राप्त हो। और हर किसी को दिल की शान्ति की तलाश करनी चाहिए। अल्लाह तआला करे कि यह स्थापित होने वाले संबंध हर दृष्टि से बरकतों वाले हों, और मैं एक-दूसरे का ख्याल रखने वाले हों और एक-दूसरे के हक अदा करने वाले हों।

ख़ुत्बा निकाह के बाद हुज़ूर अनवर नीचे दो निकाहों का एलान फरमाया

1.प्रिया अनअम चीमा पुत्री आदरणीय ख़ालिद महमूद चीमा साहिब (स्टॉकहोम) का निकाह प्रिय ओसामा सलीम (वाक्फे नौ) इब्न आदरणीय मुहम्मद सलीम साहिब मरहूम (आफ गौथन बर्ग) के साथ संपन्न हुआ।

2। प्रिया साहा एहसानुल्ला बिनत सहर, एहसानुल्ला साहिब (माल्मो) का विवाह प्रिय शहर यार जावेद इब्न आदरणीय जावेद इकबाल (माल्मो) से हुआ था।

इस के बाद हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि रिश्ते के बरकतों वाला होने के लिए दुआ कर लें। उसके बाद, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने दोनों पक्षों को हाथ मिलाने का सौभाग्य प्रदान किया।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर पधारे

व्यक्तिगत और पारिवारिक मुलाकातें

कार्यक्रम के अनुसार 6 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय आए और परिवारों से मुलाकातें शुरू हुईं। आज शाम इस सत्र में 15 परिवारों के 60 व्यक्तियों ने अपने प्यारे आक़ा से मिलने की सआदत पाई। जो परिवार मुलाकात कर रहे थे वे गोथेनबर्ग जमाअत से थे। सभी परिवार के सदस्य अपने प्रियजनों के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए छात्रों और छात्राओं को कलम प्रस्तुत किए। और छोटे बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट दीं।

मुलाकतों का यह कार्यक्रम सात बज कर पांच मिनट तक जारी रहा।

जमाअत अहमदिया स्वीडन की राष्ट्रीय मज्लिस आमला के साथ मुलाकात

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ मुलाकात हॉल में पधारे और राष्ट्रीय मज्लिस आमला स्वीडन की हुज़ूर अनवर के साथ मुलाकात शुरू हुई। हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई।

हुज़ूर अनवर के सवाल पर जनरल सैक्रेटरी ने जवाब देते हुए कहा कि हमारे पास पांच जमाअतें हैं और सभी सक्रिय हैं, और वे अपनी महीने की रिपोर्टें भिजवाती हैं इस के बाद सैक्रेटरी तहरीक जदीद ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए कहा कि 1002 तजनीद में से 862 चन्दा तहरीक जदीद में शामिल हैं। और 5 लाख 68 हज़ार 88 करोंज़ तहरीक जदीद में जमा हुआ है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : आप पैसे बढ़ाने के बारे में चिंता न करें, चन्दा देने वालों की संख्या बढ़ाएं जो अभी तक तहरीक जदीद में शामिल नहीं हैं, उन्हें जोड़ने का प्रयास करें। ख़ुद्दाम और अंसार से तहरीक जदीद के वादे लेने के लिए इन दोनों तंज़ीमों से मदद लें। लज्ना के लिए लज्ना से मदद लें। इसलिए इन संगठनों की भूमिका में वक्फ जदीद और तहरीक जदीद के विभाग रखे गए हैं।

* सैक्रेटरी तब्लीग़ ने हुज़ूर अनवर के पूछने पर बताया कि पिछले दस वर्षों में हमारी 21 बैअतें हुई हैं। हुज़ूर अनवर ने पूछा कि तब्लीग़ विभाग का बजट कितना है? फरमाया कि हर विभाग का बजट होना चाहिए। बजट विभाग की ज़रूरत पर आधारित हो। तब्लीग़ में कम से कम दस लाख बजट होना चाहिए। प्रत्येक विभाग का बजट शूरा में पेश हो और वहां वार्तालाप हो।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि तब्लीग़ विभाग के अधीन आपकी यात्रा है। संपर्क

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्ब: जुमअ:

नमाज़ की वास्तविक स्थापना करने वाले वे लोग हैं जो जमाअत के साथ नमाज़ के आदी हों और अपना ध्यान विशुद्ध रूप से अल्लाह तआला की तरफ रखते हुए नमाज़ें पढ़ने वाले हों, दुआ, इस्तिग़फार और नमाज़ अदा करने वाले हों, ध्यान इधर-उधर हो तो अपना ध्यान अल्लाह तआला की तरफ ले आएं।

क्या हम वास्तव में उन लोगों में से हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने मस्जिद बनाने वाला और इसका हक अदा करने वाला बताया है।?

इस मस्जिद के निर्माण और आबादी के साथ एक और बड़ी ज़िम्मेदारी भी यहां के निवासियों पर बढ़ गई है कि इस शहर में इस्लाम के प्रचार करने का माध्यम इस मस्जिद को बना दें

इस मस्जिद से, इस्लाम की सुंदर और शांतिपूर्ण शिक्षा का मूल रूप दुनिया के सामने उभर कर आएगा।

मस्जिद की रौनक नमाज़ियों के साथ है

इंसान अगर ख़ुदा तआला का मानने वाला और इस पर पूर्ण विश्वास रखने वाला हो वह कभी नष्ट नहीं किया जाता ।

दुनिया में डूबना तरक्की नहीं बल्कि तबाही है।

पौने चार एकड़ क्षेत्रफल में इक्कीस हज़ार चार सौ वर्ग फुट पर आधारित आठ लाख डालर से अधिक लागत से निर्माण होने वाली मस्जिद बैयतुल आफियत फिलोडल्फ़िया का उद्घाटन।

कुरआन करीम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों के हवाले से मस्जिद के स्थापित करने और उनकी पूर्ति का उद्देश्य के बारे में जमाअत के लोगों को नसीहतें।

ख़ुत्ब: जुमअ: सय्यदना अमीरुल मो 'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 28 सितम्बर 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैयतुल आफियत, फिलोडल्फ़िया, यू.एस.ए

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَأَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰٓى أُولٰٓئِكَ أَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ

(अत्तौब: 18) इस आयत का अनुवाद यह है कि अल्लाह तआला की मस्जिदों को तो वही आबाद करता है जो अल्लाह तआला पर ईमान लाए और आख़रत के दिन पर और नमाज़ और ज़कात दे और अल्लाह तआला के अलावा किसी से ख़ौफ न खाए अत: निकट है कि ये लोग हिदायत पाने वाले लोगों में शामिल किए जाऐं।

अल्हम्दो लिल्लाह अल्लाह तआला ने इस शहर में पहली मस्जिद बनाने की तौफीक़ प्रदान की और आज इसका उद्घाटन है। सांसारिक इमारतों या वे इमारतें जो सांसारिक हितों को पाने के लिए बनाई जाती हैं उनके उद्घाटन में तो दुनिया के रिवाज के अनुसार इन देशों में विशेष रूप से और दुनिया आमतौर पर सांसारिक ख़ुशियों की अभिव्यक्ति होती हैं और यह घोषणा होती है कि इससे हम यह सांसारिक जीवन का लाभ उठाएंगे और वे दुनियावी लाभ उठाएगे। लेकिन मस्जिद का उद्घाटन जब हम करते हैं, जब हम मस्जिद निर्माण करते हैं तो इस सोच के साथ करते हैं कि अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करनी है, और अल्लाह तआला के इस घर के निर्माण से हमें अपना लक्ष्य और उद्देश्य जो रखना है वह केवल और केवल एक बात यह होनी चाहिए कि हमें अल्लाह की रज़ा हासिल करनी चाहिए। और अल्लाह तआला की ख़ुशी प्राप्त करने के लिए उन बातों का करना ज़रूरी है जिन के करने का अल्लाह तआला ने आदेश दिया है और उन में सब से पहला और प्रथम उद्देश्य अल्लाह तआला की इबादत का हक अदा करना है। और इस प्रकार अदा करना है जिस तरह से अल्लाह तआला ने हमें बताया है। यह आयत जो मैंने तिलावत की है इसमें जैसा कि अनुवाद भी पढ़ा गया अल्लाह तआला ने हमें यह बताया है कि मस्जिद का निर्माण करने वालों का उद्देश्य क्या होना चाहिए या वे कौन लोग हैं जो मस्जिद निर्माण का हक़ अदा करते हैं। वे वे लोग हैं जो इस की आबादी के बारे में चिंतित रहते हैं, इसे अच्छी हालत में रखने के बारे में चिंतित रहते हैं, जो अल्लाह तआला और आख़रत के दिन पर ईमान लाने वाले हैं। कहने को तो सब कहते हैं कि हम अल्लाह तआला और आख़रत के दिन पर ईमान रखते हैं लेकिन अल्लाह तआला फरमाता है कि इसकी व्यावहारिक अभिव्यक्ति की भी आवश्यक ज़रूरी है और वह उस समय ही हो सकता है जब इकामुस्सलात का व्यावहारिक नमूना दिखाया जाए।

और इकामुस्सलात क्या है? इस की व्यावहारिक अभिव्यक्ति कैसे हो सकती है? इसकी व्यावहारिक अभिव्यक्ति एक तो नमाज़ जमाअत के साथ अदा करने में है, दूसरे नमाज़ में अल्लाह तआला के ध्यान को एकाग्रित तथा ध्यान बनाए रखने में है और यही हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों और तफसीर में पता चलता है। अत: वास्तविक नमाज़ स्थापना करने वाले वे लोग हैं जो जमाअत के साथ नमाज़ के आदी हों और अपना ध्यान शुद्ध रूप से अल्लाह तआला की तरफ रखते हुए नमाज़ें पढ़ते हों, दुआ, इस्तग़िफार और नमाज़ अदा करने वाले हों ध्यान इधर-उधर हो तो अपने ध्यान को अल्लाह तआला की तरफ लेकर आएं। हम में से प्रत्येक अपना मूल्यांकन कर सकता है कि हम किस सीमा तक "इकामुस्सलात" के इस स्तर को प्राप्त करने की कोशिश करने वाले हैं इस भौतिक दुनिया में अधिकांश नमाज़ जमाअत के साथ अदा करने की कोशिश ही नहीं करते। और यदि मस्जिद में आ भी जाऐं तो न नमाज़ों में न सुन्नतों में वह ध्यान रहता है जो नमाज़ का हक है। इस प्रकार की अवस्था अगर है तो हम ख़ुद ही अपनी हालत का अंदाज़ कर सकते हैं कि क्या हम वास्तव में उन लोगों में शामिल हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने मस्जिदों को बनाने वाले और उस का हक अदा करने वाले कहा है

फिर फरमाया कि ज़कात देने वाले हैं। धर्म के लिए माली कुरबानी करने वाले हैं। और अल्लाह तआला की सृष्टि के सुधार के लिए उन के हक अदा करने वाले हैं। फिर अल्लाह तआला फरमाता है उन को सिवाय अल्लाह तआला के भय के और कोई भय नहीं होता। इस चिन्ता में रहते हैं कि हमारे किसी कर्म के कारण अल्लाह तआला नाराज़ न हो जाए। अल्लाह तआला के प्यार से हम वंचित न हो जाएं। अपने कर्म उन हिदायतों के अनुसार करने वाले होते हैं उन आदेशों को हमेशा अपने सामने रखने वाले होते हैं। जिन का अल्लाह तआला ने एक वास्तविक मुसलमान को आदेश दिया है और जो अल्लाह तआला ने कुरआन में

वर्णन किए हैं। अत: यह एक मामूली ज़िम्मेदारी नहीं है जो एक मोमिन, मुस्लिम की है। और इस मस्जिद के बनने के बाद, यहां आने वाले लोगों की जिम्मेदारियां या इस मस्जिद से अपने आप को संबधित करने वालों की ज़िम्मेदारियां पहले से बहुत बढ़ चुकी हैं। आप ने अपनी इबादतों के भी हक़ अदा करने हैं तभी अल्लाह तआला के निकट हिदायत पाने वाले लोगों में शामिल होंगे तभी उन लोगों में शामिल किए जाएंगे जिन पर अल्लाह के प्यार की नज़र की है। इस आयत से पहले की आयत में अल्लाह तआला ने यह वर्णन किया है कि मुश्रिकों को कोई हक नहीं पहुंचता कि वे मस्जिदों को बनाएं। या उन को आबाद करें उन के दिल तो अल्लाह के अतिरिक्त से भरे हुए हैं। और जिस का दिल अल्लाह के अतिरिक्त से भरा हुआ है वह अल्लाह का हक अदा ही नहीं कर सकता न अल्लाह तआला की सृष्टि का हक अदा कर सकता है।

और शिर्क भी कई प्रकार का है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक अवसर पर फरमाया कि

" शिर्क कई प्रकार का है एक तो मोटा शिर्क है जिस से किसी इन्सान या पत्थ. या बेजान या काल्पनिक देवियों या देवताओं को ख़ुदा बना लिया जाता है। फरमाते हैं यद्यपि यह शिर्क भी इस समय दुनिया में मौजूद है परन्तु फरमाया कि यह ज़माना रोशनी और शिक्षा का इस प्रकार का ज़माना है कि अक्लें इस प्रकार के शिर्क को नफरत की निगाह से देखने लग गई हैं। यद्यपि यह शिर्क है परन्तु शिक्षा ने इन्सान को इस योग्य बना दिया है कि अक्ल इस बात को स्वीकार नहीं करती कि यह पत्थर की मूर्तियां और बुत जो हैं यह हमारा कुछ नहीं कर सकते हैं परन्तु फरमाया कि एक अन्य प्रकार का शिर्क है जो छुपे हुए रूप से ज़हर की तरह प्रभाव कर रहा है और वह इस ज़माना में बहुत अधिक बढ़ता जा रहा है। और वह यह कि अल्लाह तआला पर भरोसा तथा विश्वास बिल्कुल नहीं रहा।

(मल्फूज़ात जिल्द 3 पृष्ठ 79 -80 संस्करण यू.के 1985 ई)

और इस बात की आप ने यह व्याख्या फरमाई कि साधनों और दूसरी चीज़ों पर अल्लाह तआला से अधिक भरोसा है। अपनी नौकरियां, अपने व्यापार, अपनी सांसारिक कामों पर अधिक ध्यान केंद्रित है, और यही कारण है कि नमाज़ों की तरफ ध्यान नहीं हैं, मस्जिदों को आबाद करने की तरफ ध्यान नहीं है।

अत: हमें यह दुआ करनी चाहिए अल्लाह तआला से विनम्र होकर यह मांगना चाहिए कि हे ख़ुदा हमें कामिल मोमिन बना दे। क्योंकि मोमिन बनना भी अल्लाह तआला के फज़्लों पर आधारित है। इस लिए इस के मांगने से ही यह स्थान प्राप्त हो सकता है।

हम केवल इस बात पर ख़ुश न हो जाऐं कि हम ने एक बहुत सुन्दर मस्जिद फिलोडल्फ़िया में बना दी है, इस शहर में बना दी है, बल्कि हम इसका हक़ अदा करते हुए जब अल्लाह तआला के सम्मुख हाज़िर हों तो हम यह सुनने वाले हों कि ये वे लगो हैं जिन्होंने अल्लाह तआला के लिए मस्जिद बनाई, और फिर इस का हक अदा करने की कोशिश की। अत: इन्हें निर्देशित लोगों में और उन लोगों में गिना जाता है जिन से अल्लाह तआला प्रसन्न होता है, जिन से अल्लाह तआला राज़ी होता है। इसलिए हमें इस विचार को अपने भीतर पैदा करने की कोशिश करनी चाहिए। जब यह सोच होगी और इसके लिए कोशिश होगी तो मस्जिद के अफज़ाल और बरकतें हम दुनिया में भी महसूस करेंगे, हमारी औलादें और नस्लें भी धर्म से जुड़ी हुई होंगी और हम अल्लाह तआला के संदेश को भी इस क्षेत्र और इस शहर में फैलाने वाले होंगे। दुनिया में तौहीद को स्थापित करने वाले होंगे और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के झंडे को दुनिया में लहराने वाले होंगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मस्जिदों के निर्माण का एक उद्देश्य यह भी उल्लेख किया है कि जिस क्षेत्र में इस्लाम की वास्तविक शिक्षा और वास्तविक संदेश को पहुंचाना चाहते हो वहां मस्जिद बना दो। आपने फरमाया,"इस समय हमारी जमाअत को मस्जिदों की बहुत ज़रूरत है। यह ख़ुदा का घर है। यदि गांव या शहर में हमारी जमाअत की मस्जिद स्थापित की गई है, तो समझो कि जमाअत की तरक्की की बुनियाद पड़ गई। यदि कोई इस प्रकार का गांव या शहर है जहां मुसलमानों की संख्या कम है और इस्लाम को विकसित करने की आवश्यकता है, तो एक मस्जिद बनानी चाहिए, तो अल्लाह तआला स्वयं मुसलमानों को खींच लाएगा। लेकिन शर्त यह है ... " केवल मस्जिद बनने से नहीं होता, फरमाया " ... शर्त यह है कि मस्जिद की स्थापना में नीयत ख़ालिस हो। " ईमानदारी से बनाई जाए मस्जिद दिखावे के लिए न हो। फरमाया कि "केवल अल्लाह के लिए इसे किया जाए।" यानी मस्जिद का निर्माण केवल अल्लाह तआला के लिए किया जाए। "नफ्सानी स्वार्थों या कोई बुराई हरगिज़ दखल न हो तब बरकत होगी।"

(मल्फूज़ात जिल्द 7 पेज 119 संस्करण 1985 मुद्रित यु.के)

तो यह बात हमें हमेशा अपने सामने रखनी चाहिए कि मस्जिद हम बनाते हैं, मस्जिद की ख़ातिर हम वित्तीय बलिदान भी अगर करते हैं इसमें कोई दिखावा न हो बल्कि यह इरादा हो कि मस्जिद बनेगी तो हम भी इबादत का अधिकार अदा करने वाले होंगे हमारी भविष्य की पीढ़ी सुरक्षित होंगी और धर्म के साथ रहेंगी। इसलिए इस मस्जिद का निर्माण और आबादी के साथ एक अन्य बड़ी ज़िम्मेदारी यहां कि रहने वाले लोगों पर बढ़ गई है इस शहर में इस्लाम की तब्लीग़ का माध्यम इस मस्जिद को बना दें।

ऐसा कहा जाता है कि इस शहर में सैंकड़ों मस्जिदें या मुसलमानों के केंद्र हैं, लेकिन यह नियमित मस्जिद के रूप में निर्मित पहली मस्जिद है। अत: जब मस्जिद के रूप में यह इमारत शहर में निर्माण हुई है तो केवल यह बताने के लिए नहीं है कि मुसलमानों की मस्जिद का वास्तविक आकार कैसे होता है बल्कि यह बताने के लिए है कि इस मस्जिद से इस्लाम की सुंदर और शांतिपूर्ण शिक्षा के उद्भव का मूल रूप दुनिया में आ जाएगा। हम लोग हैं जिन्होंने नमाज़ और इबादत के साथ दुनिया में इस्लाम का सच्चा संदेश फैलाया है, और अब पहले से अधिक व्यावहारिक उदाहरणों के माध्यमों से फैलाएंगे। इस क्षेत्र में इस्लाम की शिक्षा के व्यावहारिक मामले प्रकट करके हम ने अहमदी मुसलमानों की आबादी को भी बढ़ाना है लेकिन मुझे बताया गया है कि हमारी अहमदी आबादी भी एक दो घरों के अलावा यहाँ से आमतौर पर दूरी पर ही है। अमीर साहिब से बात हो रही थी उन्होंने ने बताया कि इस मस्जिद में एक बड़ा क्षेत्र है और इसमें एक बड़ा प्लाट है जिस में निर्माण की आज्ञा भी मिल सकती है। यदि यहां बनाए गए फ्लैट या मेहमान ख़ानों को बनाने की अनुमति दी गई है, तो मस्जिद के पास आबादी हो सकती है। मुझे लगता है कि यह एक अच्छा विचार है जिसे लागू किया जाना चाहिए। अगर यह प्रस्ताव लागू होता है तो ज़रूर कोशिश होनी चाहिए कि यहाँ अहमदी घर आकर बसें और जब अहमदी आबादी होगी और इस इरादे से आएगी कि मस्जिद को भी आबाद करना है और इस्लाम की सुंदर शिक्षा के संदेश को भी पहुंचाना है तो अल्लाह तआला फिर, इस इरादे में नीयत में भी बरकत डाल देता है और यह इन्शा अल्लाह अहमदी आबादी में वृद्धि का कारण भी होगी।

हमारा इतिहास हमें यह बताता है कि 1920 ई में जब हज़रत मुफ्ती मुहम्मद सादिक साहब अमेरिका में मुबल्लिग़ के रूप में आए थे तो यहाँ फिलोडल्फ़िया बंदरगाह पर उतरे थे लेकिन आप को देश में प्रवेश नहीं होने दिया गया, उस समय उसकी अनुमति नहीं मिली और उन्हें कैद किया गया था। वहां अन्य कैदी भी थे। आप के प्रचार से दो महीने में पंद्रह कैदियों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया। (उद्धरित तारीख़े अहमदियत जिल्द 4 पृष्ठ 250) तब्लीग़ के साथ उनका व्यावहारिक नमूना भी था, उनका तक्वा भी था, उनकी दुआएं भी थीं। अत: तब्लीग़ करना भी एक ज़रूरी चीज़ है। और फिर कहा जाता है कि आपके प्रवास के दौरान, पांच छ: हज़ार अहमदी थे। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो ने उस समय यह कहा था कि अगर यही बैअतों की संख्या है तो कुछ दशकों में लाखों तक यह आंकड़ा पहुंच सकता है। (उद्धरित तारीख़ अहमदियत जिल्द 19 पृष्ठ 477) बहरहाल वह लक्ष्य तो हासिल न हो सका जो भी रोकें थीं या परिस्थितियां थीं या हमारी कमज़ोरियां थीं लेकिन अब मौका है कि हम एक प्रतिबद्धता के साथ यह कोशिश करें, बल्कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माना में भी यहां संदेश पहुंच गया था जिसका ज़िक्र हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया: इसलिए आप फ़रमाते हैं कि " ... ऐसा ही और कई अंग्रेज़ इन देशों में इस सिलसिला की स्तुति करते हैं और अपनी अनुकूलन इससे प्रकट करते हैं। ... " बड़ी सराहना करते हैं और यह जताते हैं कि हम वास्तव में इस शिक्षा के कायल हैं तो कहते हैं।" ... अत: डॉक्टर बेकर जिनका नाम है ए जॉर्ज बेकर नंबर 404 सीस कोई हैना एवेन्यू (Susquehanna Avenue) फिलोडल्फ़िया अमेरिका। पत्रिका रिव्यू आफ रिलेजनज़ में मेरा नाम और चर्चा पढ़ कर अपनी चिट्ठी में ये शब्द लिखते हैं। ... " जिसने लेख लिखा था उन्हें बेकर साहिब यह लिखते हैं कि " मैं आप के इमाम के विचारों के साथ बिल्कुल सहमत है। उन्होंने इस्लाम को ठीक उस रूप से दुनिया में प्रस्तुत

किया है जिस शक्ल में हज़रत नबीं मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसे प्रस्तुत किया था।"

(बराहीन अहमदिया भाग 5 रूहानी खज़ायन जिल्द 21 पेज 106)

फिर हज़रत मुफ्ती मुहम्मद सादिक साहब भी अपनी एक रिपोर्ट में लिखते हैं कि विनीत लिखने वाले को इन थोड़े से दिनों में जो अमेरिका देश में प्रवेश किए गुज़रे हैं बावजूद बड़ी कठिनाइयों और बाधाओं के जो द्वेषपूर्ण ईसाइयों की गईं सफलता प्राप्त हुई है। अल्हम्दो लिल्लाह अला ज़ालिक। फिर लिखते हैं कि इस समय 29 नए जेंटलमैन और लीडियाँ विनीत के प्रचार से इस्लाम में शामिल हो चुके हैं जिनके नाम नए इस्लामी नामों के साथ पेश किए जाते हैं। फिर वह विवरण प्रस्तुत किया फिर आप ने लिखा कि नंबर 1 और 2 डॉक्टर जॉर्ज बेकर और श्री अहमद एंडरसन यह हर दो साहिब एक समय में विनीत के साथ पत्राचार करते थे और एक ज़माना से मुसलमान हो चुके हैं। निष्ठावान मुसलमान हैं, मैं आवश्यक समझता हूँ उनका नाम इस सूची में सबसे पहले रखा जाए।

(उद्धरित अल्फ़ज़ल 22 जुलाई 1920 जिल्द 8 नंबर 4 पेज 1)

फिर जैसा कि मैंने कहा कुछ अन्य लोगों का उल्लेख है। अब यह सुना गया है कि फिलाडल्फिया में डॉ बेकर की क़ब्र भी यहां पाई गई है। 1918 में उनकी मृत्यु हो गई। उन को यहां दफन किया गया। तो उस ज़माने में आज से लगभग सौ साल पहले यहाँ अहमदियत आई हुई है लेकिन बहरहाल अब जबकि जैसा कि मैंने कहा अल्लाह तआला ने इस शहर में हमें एक सुंदर मस्जिद बनाने की तौफीक़ दी है तो उसके द्वारा अब एक नई प्रतिबद्धता के साथ यहाँ जमाअत और मुबल्लिग़ को भी तब्लीग़ के ऐसे कार्यक्रम बनाने चाहिए जिस से इस्लाम की सुंदर शिक्षा और यह संदेश हर तरफ फैल जाए और यह क्षेत्र शांति और सौंदर्य के आधार पर ऐसा क्षेत्र बन जाए कि लोग कोशिश करके इस क्षेत्र में आकर रहने की इच्छा करें। आबादी के अनुसार यह शहर संयुक्त राज्य अमेरिका का छठा सबसे बड़ा शहर है। अगर इस शहर में और उसके आसपास क्षेत्र में इस्लाम का सही संदेश पहुंचाया जाए तो इंशा अल्लाह तआला इन्हीं लोगों से वे पैदा होंगे जो सही आबिद और मस्जिदों को आबाद करने वाले होंगे और अल्लाह तआला का तक्वा रखने वाले और निर्देशित लोग होंगे।

अत: हर मस्जिद जो हम बनाते हैं हमारे लिए एक बहुत बड़ी चुनौती लेकर आती है कि अपनी अवस्थाओं को भी दुरुस्त करना है, अल्लाह तआला से संबंध में भी और व्यावहारिक नमूना में भी अपनी स्थितियों को बेहतर करना हैं और तब्लीग़ के मैदान भी खोलने हैं, केवल इतनी बात पर ख़ुश होकर नहीं बैठ जाना कि हम ने मस्जिद बना ली। हम ने इस ज़माना में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम को स्वीकार किया है जिस ने इस्लाम का नव जागरण करना था। नई ज़िन्दगी की शुरूआत करनी थी। आप ने उन सारी ग़लत फहमियों को दुनिया के दिमाग़ों से निकालना था जो इस्लाम के बारे में पैदा हो चुकी थीं। चाह वे ग़ैर मुस्लिमों के द्वारा पैदा हुई थीं या तथा कथित उल्मा की तफ्सीरों से पैदा हुई हैं। और अब यह काम हमारा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मानने वालों का है कि इस दृष्टि से अपनी सारी शक्तियों को काम में लाएं अपनी अवस्थाओं तथा हालतों को उस स्तर तक ले जाएं जो अल्लाह तआला कि निकट स्वीकार करने के योग्य हैं जिन के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बार बार ध्यान दिलाया है।

इस मस्जिद के निर्माण में जो खर्च हुआ है जो मुझे बिताया गया है अब तक 8.1 मिलियन डॉलर खर्च कर चुका है। 1/3 भाग जमाअत ने दिया है, कुछ राष्ट्रीय मुख्यालय ने दिया है, बाकी विवरण में आगे भी बता दूँगा, लेकिन 8.1 करोड़ डालर के खर्च का लाभ तो तब है जब इस लक्ष्य को पूरा करें और दूर रहने के बावजूद यदि जनसंख्या की आबादी अभी यहां नहीं है, तो इस शहर में रहने वाले मस्जिद की आबादी की पांच समय करने की कोशिश करें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने एक अवसर पर फरमाया कि:

"मस्जिदों की असल सुन्दरता इमारतों के साथ नहीं है, बल्कि उन लोगों के साथ जो ईमानदारी से नमाज़ पढ़ते हैं। अन्यथा यह सब मस्जिदें वीरान पड़ी हुई हैं ...।" उस समय सुनसान पड़ी हुई थीं और आजकल भी जो आबाद हैं वहाँ ग़लत प्रकार के तथाकथित विद्वानों के ग़लत नारों ने उन्हें शांति के बजाय फसाद की जगह बना दिया गया है। फिर आप फरमाते हैं कि ... रसूल करीम की मस्जिद छोटी थी। उसकी छत खजूर की छड़ों से बनाई गई थी और बारिश के समय छत से पानी टपकता था ... "लेकिन क्या कुछ काम हुए वहां। फरमाते हैं कि मस्जिद की रौनक नमाज़ियों से है।" फिर फरमाया "मस्जिदों के लिए, आदेश है कि तक्वा के साथ बनाई जाएं।"

(मल्फूज़ात जिल्द 8 पेज 170 संस्करण 1985 मुद्रित यु. के)

अत: अगर ईमानदारी के साथ नमाज़ें पढ़ें और तक्वा पर चलते हुए आकर इस मस्जिद को आबाद रखेंगे तो इबादतें भी स्वीकार होंगी और ग़ैर मुसलमानों में इस्लाम का प्रचार सही रंग में हो सकेगा। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक अवसर पर फरमाया कि जो हमारी मस्जिद में नीयत से प्रवेश होगा कि भलाई की बात सीखे वह अल्लाह तआला की राह में जिहाद करने वाले की तरह होगा।

(अहमद बिन हंबल जिल्द 3, पृष्ठ 322 मसनद अबी हुरैरह हदीस 8587 आलेमुल कुतुब अल-बैरूत 1998 ई)

तो यह है असली मुस्लिम का उद्देश्य है। आजकल इस्लाम को बदनाम किया जाता है कि इस्लाम जिहाद शिक्षा देता है और कुछ मुसलमानों का कर्म भी बदनामी में शामिल हैं लेकिन वास्तविक मोमिन का काम यह है कि नेकियाँ सीखे, नेकियों का पालन करे, नेकियाँ फैलाए तो मानो वह जिहाद कर रहा है और यह जिहाद करना आज हम अहमदियों का काम है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम हमें बार बार नेकियों पर चलने और तक्वा पर कदम मारने की तरफ ध्यान दिलाते हैं अत: एक अवसर पर आप ने फरमाया:

" इस वसीयत को ध्यान से सुनें" " इस वसीयत को ध्यान से कि वे जो इस सिलसिले में दाख़िल होकर मेरे साथ इरादत और मुरीदी का संबंध रखते हैं इससे उद्देश्य यह है कि ताकि वे नेक चलनी और नेक आदतों और तक्वा के उच्च स्तर तक पहुँच जाएं और कोई दंगा और दुष्टता और लुच्चापन उन के पास नहीं आ सकता था। वे नमाज़ओं के पाबन्द हों। वे झूठ नहीं बोलें। वे किसी को भी जीभ से चोट न पहुंचाएं ... ।" कोई असुविधा न पहुँचाएँ। "... वह किसी प्रकार के अधर्म के दोषी न हों और किसी शरारत और अत्याचार और दंगा और प्रलोभन का विचार भी मन में न लाएं। " फरमाया " अत: प्रत्येक प्रकार के पाप और अपराध और अकरणीय और अकथनीय ... ' यानी हर प्रकार के न करने वाले और न कहने वाली कई दोष जो हैं, किसी प्रकार की बुराई व्यक्त न हो उनसे। "... और सभी स्वाभाविक भावनाओं और व्यर्थ की बातों से बचें और ख़ुदा तआला के पाक दिल दिल और ग़रीब बंदे हों। और कोई विषाक्त ख़मीर उनके अस्तित्व में न रहे। ... और सभी इंसानों की सहानुभूति उन का नियम हो और सर्वशक्तिमान ईश्वर से डरें और अपनी ज़बानों और अपने हाथों और अपने दिल को प्रत्येक अशुद्ध और शरारत के तरीकों और खयानतों से बचाऐं। और पांचों समय की

दुआ का
अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद
शरीफ़
जमाअत अहमदिया
मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

नमाज़ों को बहुत अच्छी तरह से अदा करें। और अत्याचार और हनन और ग़बन और रिश्वत और मालों का खा लेना और व्यर्थ की तरफदारी से बचें। ... और किसी बुरी सुहबत में न बैठें।"

(मजमूआ इश्तेहार जिल्द 3 पृष्ठ 46-47 संस्करण 1985 मुद्रित यू. के)

विशेष रूप से युवाओं को इस ओर ध्यान देना चाहिए और बुरी सुहबत में आजकल बहुत सारे विभिन्न प्रकार के आधुनिक साधन हैं सोशल मीडिया और अन्य स्थानों पर ग़लत प्रकार की बात हो रही हैं, ये सभी बुरी सुहबत हैं उनसे बचने की कोशिश करनी चाहिए।

अब यहां पाकिस्तान से कई लोग हैं जो शरण के लिए आए हैं या शरणार्थी बन गए हैं। उन्हें बहुत ध्यान देने की जरूरत है। हर अहमदी के सामने इस दुनिया की कोई ख़ुशियां और शुभकामनाएं नहीं होनी चाहिए, बल्कि अगली दुनिया की चिंता होनी चाहिए, वहां रहने के पुरस्कार और लाभ हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने एक स्थान पर फरमाया: "अल्लाह तआला भी मनुष्यों की दैनिक पत्रिका बनाता है।" ... दैनिक कर्मों को लिखा जाता है, फरमाता है .."अत: इन्सान को भी चाहिए कि अपने हालात की एक पत्रिका तैयार की जानी चाहिए ... "स्वयं इन्सान को यह देखने की कोशिश करनी चाहिए कि आज सारा दिन मैंने क्या काम किया है और आज क्या बुराई की है। किन बातों पर नेकियों पर मैंने अनुकरण किया है और दिन पर नहीं किया। फरमाया " और इस पर ग़ौर करना चाहिए" केवल तैय्यार ही नहीं करना बल्कि इस पर ध्यान देने चाहिए तब ही इन्सान नेकियों की तरफ जा सकता है। अल्लाह तआला के निकट हिदायत प्राप्त करने वालों में से हो सकता है।" फरमाया कि" नेकी में कहां तक आगे कदम रखा है।" यह देखो " इन्सान का आज और कल बराबर नहीं होने चाहिए। जिस का आज और कल इस इस दृष्टि से की नेकी में क्या तरक्की की है बराबर हो गया वह घाटे में है।" फरमाते हैं अगर बराबर किया हो लाभ नहीं यह तो हानि है।..." इन्सान अगर ख़ुदा को मानने वाला और उसी पर पूर्ण ईमान रखने वाला हो तो कभी नष्ट नहीं किया जाता।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 10 पेज 137.138 1985 प्रकाशन यू के)

तो यह बहुत सोचने का स्थान है। जब अल्लाह तआला हम पर बरकतें नाज़िल कर रहा है, तो हमें उसके प्रति आभारी होना चाहिए। तो जो लोग अपने सांसारिक व्यवसायों के कारण ख़ुदा तआला और उस की इबादत के हक को भूल गए हैं या उस पर ध्यान नहीं जैसा कि होना चाहिए वे अपनी समीक्षा कर लें कि हमारे बैअत का वादा क्या है और हमारे कर्म कार्य हैं। और जो यहां नए आए हैं उन्हें यह भी याद रखना चाहिए कि दुनिया में डूब जाना तरक्की नहीं है बल्कि तबाही है। और उन्होंने हमेशा इस बात को सामने रखा है धर्म को संसार पर प्राथमिकता देने वाले होंगे। मस्जिदों के हक अदा करने वाले हों अल्लाह की इबादत का हक अदा करने वाले हों।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक और उद्धरण प्रस्तुत करता हूँ आप फ़रमाते हैं कि:

"याद रखो हमारी जमाअत इस बात के लिए नहीं है जैसे आम दुनिया दार जीवन व्यतीत करते हैं, निरा जीभ से कह दिया कि हम इस सिलसिले में प्रवेश करते हैं और अनुकरण की कोई ज़रूरत न समझी, जैसे बदकिस्मत मुसलमानों की अवस्था है कि पूछ कि तुम मुसलमान हो? तो कहते हैं शुक्र अल्हम्दो लिल्लाह। मगर नमाज़ नहीं पढ़ते और अल्लाह के शिआरों का सम्मान नहीं करते। अत: मैं तुम से यह नहीं चाहता कि केवल जीभ से तुम स्वीकार करो। और अनुकरण से कुछ न दिखाओ। यह निकम्मी अवस्था है। ख़ुदा तआला इस को पसन्द नहीं करता। और दुनिया की इस अवस्था ने ही मांग कि के अल्लाह तआला ने मुझे सुधार के लिए खड़ा किया है। अत: कोई अगर तुम्हारे साथ सम्बन्ध रख कर अपनी हालत का सुधार नहीं करता और व्यवहारिक कुव्वतों को तरक्की नहीं देता बल्कि केवल ज़ुबानी इकरार को हा काफी समझता है तो मानो अपने अनुकरण से मेरे न होने पर ज़ोर देता है।"

"और व्यावहारिक ताक़तों की तरक्की यही है जैसे कि बयान हो चुका है कि अल्लाह तआला का अधिकार देना इबादतों का भी अधिकार देना और इस की सृष्टि का अधिकार देना, अल्लाह तआला का संदेश दुनिया में पहुंचाना। ... फरमाते हैं, यदि तुम अपने कर्मों से साबित करना चाहते हो कि मेरा आना व्यर्थ है, तो फिर मेरे साथ सम्बन्ध का क्या लाभ है?" यदि मेरा साथ रिश्ता रखते हो तो मेरे लक्ष्यों और उद्देश्यों को पूरा करो। और वह यही है कि अल्लाह तआला के सम्मुख अपनी ईमानदारी और सच्चाई दिखाओ और क़ुरआन शरीफ की शिक्षा पर इसी तरह अमल करो जिस तरह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कर दिखाया और सहाबा ने किया। क़ुरआन के मूल उद्देश्य को समझें। और इसका पालन करें। ख़ुदा तआला के समक्ष केवल इतनी ही बात काफी नहीं कि ज़बान से स्वीकार कर लिया और कर्म करने में कोई तेज़ी न दिखाई। याद रखो कि वह जमाअत जो ख़ुदा तआला स्थापित करनी चाहता है वह कर्मों के बिना ज़िन्दा नहीं रह सकती। ... " जमाअत बिना कर्म के नहीं रह सकती। " ... यह वह भव्य जमाअत है जिसकी तैयारी हज़रत आदम के समय से शुरू हुई । कोई नबी दुनिया में नहीं आया जिस ने इस दावत की सूचना नहीं दी। तो इस का सम्मान करो और इसका सम्मान यही है कि अपने कर्म से सबित कर के दिखाओ कि सच्चों की गिरोह तुम ही हो। "

(मल्फ़ूज़ात 3, पृष्ठ 370-371, संस्करण 1985, इंग्लैंड)

तो यह कोई आसान काम नहीं है, बहुत ध्यान के साथ इस तरफ ध्यान देने की आवश्यकता है। हमेशा याद रखना चाहिए कि दुनिया या दुनिया की दौलत हमें और हमारे पीढ़ियों के अस्तित्व की गारंटी नहीं है बल्कि दोनों जहान में अल्लाह तआला के फज़्लों और रहम को प्राप्त करने के लिए अल्लाह तआला से संबंध बनाना अस्तित्व की गारंटी है, उसकी आज्ञाओं पर चलना जीवित रहने की गारंटी है। अल्लाह तआला सभी को उसके अनुसार रहने की क्षमता देता है।

जैसा कि मैं आमतौर पर मस्जिदों के उद्घाटन पर मस्जिद के कुछ विवरणों की व्याख्या करता हूं, वह इस समय भी उपस्थित होंगे। कुछ आंकड़े हैं, इस मस्जिद की इमारत के लिए भूमि 2007 ई में ख़रीदी गई थी, फिर लगभग छह साल बाद, 2013 ई में काम शुरू हुआ। फिर कुछ बाधाएं मध्य में आती रहीं, जो भी थीं वैध या अवैध, जिसके कारण अब यह मस्जिद इस वर्ष पूरा किया जाता है। और जैसा कि मैंने बताया कि $ 8.1 मिलियन खर्च किए गए थे, फिलाडेल्फिया के स्थानीय समुदाय ने 2 मिलियन चार लाख 35 हज़ार से अधिक डालर दिए है। इसके इलावा 1 मिलियन 2 हज़ार 43 हज़ार से अधिक अमेरिकी का अन्य जमाअतों ने अदा किया और 4 लाख 78 हज़ार से ऊपर राष्ट्रीय मुख्यालय ने अदा किया लगभग आधे से अधिक हिस्सा है। शुरुआत में केवल दो एकड़ जमीन ली गई थी और फिर बाद में एकड़ खरीदी गई थी। फिर 2015 ई में, एक गैर-मुस्लिम, विशेष रूप से, ईसाई ने एकड़ जमीन की जमाअत को हिबा की, जो भी इन का सांसारिक उद्देश्य था, लेकिन उन्होंने जमाअत को दान दी। अब इसका कुल क्षेत्र चार एकड़ है। जैसा कि मैंने पहले कहा था, एक आवास की योजना या फ्लैट आदि बनाया जा सकता है। इस इमारत का निर्माण क्षेत्र 214000 वर्ग फुट है। एक तीन मंजिला इमारत है, बेसमेंट में एक वाणिज्यिक रसोईघर है, एक अपार्टमेंट मध्य मंजिल में है इसे बीच में से दो बनाया गया है। कार्यालयों और पुस्तकालयों को शीर्ष मंजिल में बनाया गया है। एक मस्जिद वाला हिस्सा है और दूसरा भाग भी दो मंज़िल वाला है। पुरुषों और महिलाओं का एक बड़ा हॉल है जो कि पांच हजार वर्ग फुट शामिल हैं। इसमें भी विभाजन कर के दो हिस्सों में भी बांटा गया है। 350 के लगभग पुरुष और 350 के लगभग महिलाओं के लिए नमाज़ पढ़ने का स्थान है। इमारत के इस खंड में पुरुषों और महिलाओं के अलग-अलग वाश रूम बनाए गए हैं, अन्य आवश्यकताएं हैं। छ: हज़ार वर्ग फुट का एक बहुउद्देश्यीय हॉल है, जिसमें सात सौ लोग बैठकर खेलें हो सकती हैं, अस्थायी कार्यालय भी हैं। 46 वाहनों के लिए पक्की पार्किंग भी बनाई गई है। कुल 86 गाड़िया और अतिरिक्त भी आ सकती हैं।

अल्लाह तआला करे कि जैसा कि अल्लाह तआला ने मस्जिद निर्माण के उद्देश्य उल्लेख किया है जो अभी वर्णन किए गए हैं हर अहमदी इस उद्देश्य को पूरा करने वाला हो और यह मस्जिद क्षेत्र में इस्लाम के वास्तविक संदेश पहुंचाने में मील का पत्थर के रूप में हो।

☆ ☆
☆

ख़ुत्ब: जुमअ:

*** ... बद-ज़नी (कुधारणा) यदि यह दूर हो जाती है तो हमारे परिवेश के आधे फसाद और झगड़े और परेशानियां दूर हो जाएंगी। एकता पैदा हो जाएगी। एकता पैदा होगी। * ... इबादतों और दुआओं को स्वीकार करवाना है तो इसके लिए बुनियादी चीज़ यही है कि इन्सान बुराइयों से रुके और अच्छे कर्मों को अपनाए । यह तक्वा है। * ... विश्वास से केवल काम नहीं करेगा। वास्तविक चीज़ कर्म हैजिस की हमें कोशिश करनी चाहिए। इसलिए इस्लाम लाना पर्याप्त नहीं है, अहमदी होना पर्याप्त नहीं है, अल्लाह तआला के आदेशों का पालन करना ज़रूरी है। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जो मेरे सहाबा हैं, ये सितारों की तरह हैं, जिस के पीछे भी चलोगे वे तुम्हें सीधे रास्ते पर ले जाएगा।**

याद रखो जिस का उसूल दुनिया है, फिर यह वह इस जमाअत में शामिल है जो इस जमाअत में वे अल्लाह तआला के पास नहीं है। अल्लाह तआला के निकट वही इस जमाअत में शामिल होगा जो दुनिया में दिल लगाने वाला न हो।

अल्लाह तआला कभी उस व्यक्ति को बर्बाद नहीं करता है जो केवल उस का हो जाता है, बल्कि वह ख़ुद उस की सारी ज़रूरतों का ध्यान रखने वाला है।

यह कभी नहीं हुआ और नहीं होगा कि ख़ुदा तआला की सच्ची आज्ञा पालन करने वाला हो और वह या उस की औलाद नष्ट हो जाए। यह बैअत इस समय काम आ सकती है जब धर्म को प्राथमिकता दी जाए या उस में तरक्की की जाए।

*** ... ये आपदाएं कोई मामूली आपदाएं नहीं हैं। इन की भविष्यवाणी सौ साल पहले हो चुकी हैं।और इनसे बचने का एकमात्र तरीका यह है कि मनुष्य अल्लाह तआला की तरफ आए।**

आग है पर आग से वे सब बचाए जाऐंगे   जो कि रखते हैं ख़ुदाए ज़ुलअजाएब से प्यार

अल्लाह तआला की कुछ बातों को न मानना उस की सब बातों को ही छोड़ना है।

अल्लाह तआला करे कि हम बैअत का हक अदा करते हुए अपने अन्दर पवित्र तब्दीलियां पैदा करें।

ख़ुत्ब: जुमअ: सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 26 अक्तूबर 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुस्समीई, होस्टन , अमरीका।

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

अल्लाह तआला का यह हम पर बहुत बड़ा इहसान है कि उस ने हमें अपने फज़ल से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम को स्वीकार करने की तौफीक़ प्रदान की। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इसे सच्चे ग़ुलाम को मानने की तौफ़ीक़ अता फरमाई जिसे आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि ने "हमारे महदी" के शब्द से संबोधित फ़रमाया। (सुनन अद्दार कुली जिल्द1 पृष्ठ 51 हदीस 1777 किताबुल ईदैन मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 2003 ई) यह प्यार और निकटता को व्यक्त करने का उच्च स्थान है जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि ने हमारा कहकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और महदी मौऊद अलैहिस्सलाम को अता फरमाया। जहां हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने लिट्रेचर में इस्लाम के उच्च धर्म होने के बारे में बताया है और आरोप करने वालों के आरोप को उन्हीं पर उलटा प्रमाणित कर के यह साबित फरमाया कि आज वास्तविक और अल्लाह तआला का सानिध्य पाने वाला और गुनाहों से मुक्ति देने वाला अगर कोई धर्म है और धर्म है वास्तव में तो वह केवल इस्लाम है। वहाँ अपनों के प्रशिक्षण के लिए भी अनगिनत भाषण, लेखों और मज्लिसों में अनगिनत उपदेश फरमाए जो हमारे लिए कदम कदम पर मार्ग दिखाने वाले हैं और निर्देश के माध्यम हैं।

आप ने अपने मानने वालों को बड़े दर्द के साथ बैअत का हक अदा करने और हकीकी मोमिन बनने की तरफ मार्ग दर्शन किया। ये वे उपदेश हैं जिन्हें हमें हमेशा अपने सामने रखने चाहिए और यह हमारे आध्यात्मिक प्रशिक्षण का स्रोत है। यही वह तरीका है जिसके माध्यम से हम धर्म की समझ भी प्राप्त कर सकते हैं। और यही वह तरीका है जिसे हम अल्लाह तआला तक पहुंचने का रास्ता ढूंढ सकते हैं। यही वह तरीका है जिसके माध्यम से हम कुरआन के रहस्यों और ज्ञान तक पहुंच सकते हैं। और यही वह तरीका है जिसे हम आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्थान तथा मकाम को पहचान सकते हैं। और यही वह तरीका है जिससे हम अपनी मान्यताओं को सही कर सकते हैं। और यही वह तरीका है जिसके माध्यम से हम अपनी व्यावहारिक स्थितियों में सुधार कर सकते हैं। अगर हम इस ख़ज़ाने से लाभ नहीं उठाते हैं तो यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण होगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अपने शब्दों में जो शक्ति और ताकत है किसी और के शब्दों में नहीं हो सकती है। और क्यों न हो! यही तो वह इमाम है जिसे अल्लाह तआला ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में इस्लाम के पुन: सुधार के लिए भेजा है, और अल्लाह तआला की निकटता पाने के लिए इस ज़माने में भेजा है। अत: यह हमारा है, जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने का दावा करते हैं यह फर्ज़ है कि आपके शब्दों को पढ़ें, सुनें और उन पर अनुकरण करने का कोशिश करें। इस स्थितियों को इस अवस्था पर ले आएं जिस की हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हम से आशा रखी है।

इस समय, मैं आपके कुछ उद्धरण प्रस्तुत करूंगा जो हमारी ज़िन्दगियों का लक्ष्य है। एक उद्देश्य है जो आपने हमारे सामने रखा और बताया कि अहमदी को क्या करना चाहिए, इसे कैसे होना चाहिए। आजकल की भौतिक दुनिया में इन बातों का महत्व बहुत अधिक बढ़ जाता है जब हम में से कुछ की वरीयता भी दुनिया में अधिक हो गई हैं और धर्म को इतना महत्व नहीं दिया जाता। विश्वास से हम ख़ुद को अहमदी मुसलमा कहते हैं, लेकिन व्यावहारिक कमज़ोरियां हम में बहुत अधिक पैदा हो रही हैं इस उपदेशों के आलोक में हम में से प्रत्येक अपनी समीक्षा कर सकता है कि हम कहाँ खड़े हैं और हमें कहाँ होना चाहिए।

तक्वा क्या है? तक्वा का मानक क्या होना चाहिए? नेकी क्या है नेकी की गुणवत्ता क्या होनी चाहिए? हमारी जिम्मेदारियां क्या हैं? इसके बारे में एक जगह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम फरमाते हैं कि

सच्चा तक्वा जिस से अल्लाह तआला प्रसन्न हो उसे पाने के लिए बार बार अल्लाह तआला ने फरमाया है कि يَاأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ कि हे ईमान वालो अल्लाह तआला का तक्वा धारण करो और फिर यह भी कहा कि

إِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ

(सूरत अन्नहल 129) अर्थात अल्लाह तआला उन की सहायता और मदद में होता है जो तक्वा धारण करें।

फरमाते हैं कि तक्वा कहते हैं बुराई से परहेज़ करने को और मुहसेनून वे होते

हैं जो इतना ही नहीं कि बुराई से परहेज़ करें बल्कि नेकी भी करें और फिर यह भी फरमाया कि لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى(यूनुस 27) अर्थात उन नेकियों को भी संवाल संवार कर अदा करते हैं।"

फरमाते हैं " मुझे यह वह्यी बार बार हुई कि اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ(सूरह अन्नहल 129) और इतनी बार हुई कि मैं गिन नहीं सकता।" आप फरमाते हैं "......खुदा जाने दो हज़ार बार हुई इससे उद्देश्य यही है ताकि जमाअत को मालूम हो जाए कि सिर्फ इस बात पर ही भरोसा नहीं होना चाहिए कि हम इस जमाअत में सम्मिलित हो गए या शुष्क ईमान से राज़ी हो जाओ। अल्लाह ताला की सहायता और मदद उसी समय मिलेगी जब सच्चा तक्वा हो और फिर नेकी साथ हो।"

फरमाया "यह गर्व की बात नहीं कि इंसान इतनी सी बात पर ख़ुश हो जाए कि जैसे वह ज़ना नहीं करता या उसने ख़ून नहीं किया किसी को कत्ल नहीं किया चोरी नहीं की।" फरमाते हैं "यह कोई सम्मान है कि बुरे कामों से बचने का गर्व हासिल करता है" यह कोई बात नहीं है इसका कोई महत्व नहीं है हम बुरे कामों से बचे हुए हैं। फरमाते हैं कि "वास्तविक वह जानता है।" करने वाला अगर यह काम नहीं करता "वह जानता है कि चोरी करेगा तो कानून की दृष्टि से कैद में जाएगा" अर्थात कैद होगा पकड़ा जाएगा सज़ा मिलेगी। फरमाते हैं कि "अल्लाह तआला के निकट इस्लाम ऐसी चीज़ का नाम नहीं है कि बुरे काम से ही परहेज़ करें।(इतना ही इस्लाम नहीं) बल्कि जब तक बुराइयों को छोड़कर नेकियों को धारणा न करें वह इस रूहानी जिंदगी में जिंदा नहीं रह सकता। नेकियां बतौर खाने के हैं जैसे कोई व्यक्ति खाने की बिना ज़िंदा नहीं रह सकता इसी तरह जब तक नेकी धारणा न करे तो कुछ नहीं।" बुराइयां छोड़ो और नेकियां करो तब रूहानी ज़िंदगी मिलती है।

कुछ बुराइयां किस तरह इंसान की ज़िंदगी पर प्रभाव डालती हैं जो इंसान महसूस भी नहीं कर रहा होता। परंतु एक समय में वह इन्हीं के कारण से अल्लाह तआला की पकड़ में आ जाता है। इसके बारे में बयान फरमाते हुए आप फरमाते हैं कि

"कुछ गुनाह मोटे मोटे होते हैं जैसे झूठ बोलना, ज़ना करना ख़यानत करना, झूठी गवाही देना, लोगों के हक मारना, शिर्क करना इत्यादि लेकिन कुछ गुनाह सूक्ष्म होते हैं कि इंसान उसमें व्याप्त होता है और समझता ही नहीं। जवान से बूढ़ा हो जाता है मगर उसे पता नहीं लगता कि गुनाह करता है। उम्र गुज़र जाती है। गुनाह करते हुए छोटे-छोटे गुनाह समझता है। पता ही नहीं लग रहा होता। जैसे आपने उदाहरण दिया शिकवा करने की आदत होती है। शिकवा करना छोटी-छोटी बातों पर दु:ख प्रकट करना इधर-उधर की बातें करना उसने यह कह दिया उसने वह कह दिया। फरमाते हैं कि "ऐसे लोग इस को बिल्कुल एक साधारण छोटी बात समझते हैं हालांकि कुरआन शरीफ ने इसको बहुत ही बड़ा करार दिया है।" यही छोटी छोटी बातें, जो शिकायतें हैं, शिकवे करना, अंत में चुग़ली बन जाता है। इसलिए कुरआन शरीफ ने इस बात को बहुत बड़ा क़रार दिया है अत: फ़रमाया

اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا

(अल्हुजरात 13)खुदा तआला इससे नाराज़ होता है कि इंसान ऐसी बात ज़ुबान पर लाए जिससे उसके भाई की उपहास हो। अल्लाह तआला ने फरमाया क्या तुम इस बात को पसंद करते हो क्या तुम अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाओ। आप फरमाते हैं कि "ख़ुदा तआला इस से नाराज़ होता है कि इंसान ऐसी बात ज़ुबान पर लाए जिस से उस के भाई का तिरस्कार हो। इस से अल्लाह तआला नाराज़ होता है और ऐसी कार्रवाई करें जिससे उसको नुकसान पहुंचे अर्थात केवल बातें ही न हों। बातें फिर दूसरों को नुकसान पहुंचाने वाली भी होती हैं। शिकवे शिकायत शुरू होते हैं, एक दूसरे के बारे में कु-धारणाएं शुरू होती हैं, चुग़लियां होती है और फिर इंसान ऐसी अवस्था में पहुंच जाता है जहां वे कोशिश करता है कि दूसरों को नुकसान पहुंचाए।

आप फरमाते हैं "एक भाई के बारे में ऐसा वर्णन करना जिससे उसका अज्ञान और नादान होना प्रमाणित हो उसकी आदत के तौर पर बैग़रीत या दुश्मनी पैदा हो ये सब बुरे काम हैं। ऐसा ही कंजूसी है, क्रोध है, ये सब बुरे काम हैं। कंजूसी है, ग़ुस्सा में आना है ये सब बुरे काम हैं। "अत: अल्लाह तआला के इस आदेश के अनुसार पहला स्तर यह है कि इंसान इन से परहेज़ करे। और हर प्रकार के गुनाहों से जो चाहे आंखों के बारे में हों, या कानों से, हाथों से, या पांव से बचता रहे।" चाहे आंखों के बारे में हो कानों से हाथों से या पांव से कोई भी कसूर न हो। किसी भी अंग से गुनाह हो रहा हो उन से बचता रहे। क्योंकि फरमाया है

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُوْلًا

(बनी इस्राईल 37) अर्थात जिस बात का ज्ञान नहीं चाहिए कि उसकी पैरवी मत करो क्योंकि कान, आंख, दिल और हर एक अंग से पूछा जाएगा।" मरने के बाद इंसान अल्लाह तआला के पास जाएगा तो इन चीज़ों से सवाल होंगे। आप फरमाते हैं कि "बहुत सी बुराइयां केवल कुधारणा से ही पैदा हो जाती हैं। एक बात किसी के बारे में सुनी और शीघ्र विश्वास कर लिया।" बिना अनुसंधान के" फरमाया "यह बहुत बुरी बात है जिस बात का विश्वसनीय ज्ञान और विश्वास न हो उसको दिल में स्थान मत दो यह असल कुधारणा को दूर करने के लिए है कि जब तक देख न लो और फैसला सही न करो न दिल में स्थान दे और न इस प्रकार की बात ज़बान पर लाए।" फरमाया "यह कैसी मज़बूत बात है। बहुत से इंसान है जो ज़बान के द्वारा पकड़े जाएंगे।" अत: कुधारणा जो है अगर यह दूर हो जाए तो हमारे परिवेश के आधे फसाद और झगड़े दूरियां दूर हो जाएं। एकता पैदा हो जाए। वहदत पैदा हो जाए।" यहां दुनिया में भी देखा जाता है कि बहुत से आदमी के केवल ज़बान के पकड़े जाते हैं और इन्हें लज्जा और हानि उठाना पड़ती है। कोई बात कही और पकड़े गए। सच्ची नहीं निकलती तो फिर लज्जा होती है। सच साबित नहीं होती। इसलिए उचित है कुधारणा न करो। दूसरों के बारे में अच्छे विचार रखो। जब कोई बात सुनो तो अनुसंधान कर लिया करो। इंसान कमज़ोर है। कुछ विचार दिल में आ जाते हैं अगर उन पर अनुकरण ना करे इंसान तो अल्लाह तआला माफ कर देता है। अल्लाह तआला केवल विचारों के आने के कारण पकड़ता नहीं है बल्कि उस पर अनुकरण करने की वजह से पकड़ होती है। इस बात को वर्णन फरमाते हुए कि अल्लाह तआला किस तरह पकड़ता है। आप फरमोत हैं कि

"दिल में जो ख़तरे और सरसरी विचार गुज़र जाते हैं उनके लिए कोई पकड़ नहीं। जैसे किसी के दिल में गुज़रे कि अमुक माल मुझे मिल जाए तो अच्छा है। यह एक प्रकार का लालच तो है लेकिन केवल उतने ही विचार जो अपने आप दिल में आए और गुज़र जाए कोई पकड़ नहीं। लेकिन जब ऐसे विचार दिल में जगह देता है और फिर प्रतिबद्धता दिखाता है और किसी न किसी तरह से वह माल ज़रूर लेना चाहिए ... " ग़लत तरीके से माल कमाना है, यह विचार आ जाए कि अगर मेरा टैक्स इतना बनता है, इसमें अगर मैं इतनी कमी कर दूं तो मुझे इतनी बचत हो जाएगी। विचार आना तो कोई बात नहीं, अल्लाह तआला नहीं पकड़ता लेकिन अगर इस पर अमल किया, टैक्स चोरी की, सरकार को क्षति पहुंचाया या सच नहीं बोला, अपने चन्दों में अपनी आय कम लिखवाई तो अल्लाह तआला पकड़ता है। और कई ऐसे अनुभव हैं, बहुत सारे लोगों के उदाहरण हैं जिनकी फिर आय भी इसी तरह धीरे धीरे कम हो जाती है और उसी स्तर पर आ जाती है जिस पर वे अपनी आय प्रदर्शित कर रहा होता है, अल्लाह तआला के समक्ष कुरबानी में और सरकार के हक अदा करने में भी। फरमाया "तो फिर यह गुनाह पकड़ योग्य है। अत: जब दिल प्रतिबद्धता कर लेता है तो उसके लिए शरारतें और छल करता है।" दुनियादारों में सांसारिक लालचों में भी व्यापारिक लोग हैं या दूसरे लोग किसी चीज़ को पाने के लिए ग़लत तरीके से जब दिल में ख़याल आता है इस पर अनुकरण करना शुरू करते हैं, प्रोग्राम बनाना शुरू करें, योजनाएं बनाना शुरू करें। फिर फरमाया कि, "यह गुनाह पकड़ योग्य होता है। तो यह इस प्रकार के पाप हैं जिन की तरफ बहुत ही कम ध्यान के दिया जाता है और यह व्यक्ति की मौत का कारण हो जाते हैं। अक्सर वे बड़े और खुले पापों से नफरत करते हैं।" आप फरमाते हैं कि कई आदमी ऐसे होंगे जिन्होंने कभी खून नहीं किया होगा, किसी को कत्ल नहीं क्या होगा, सेंध नहीं की होगी, चोरी नहीं की होगी, डाका नहीं डाला होगा या और इस तरह के बड़े पाप नहीं किए होंगे लेकिन सवाल यह है कि वे लोग कितने हैं जिन्होंने किसी का गिला नहीं किया, कोई शिकवा नहीं किया, किसी के पीछे कोई बात नहीं की, शंकित नहीं, वे लोग कितने हैं? या किसी अपने भाई का अपमान करके उसे दुख नहीं पहुंचाया, किसी को भावनात्मक ठेस नहीं पहुंचाई, ये लोग कितने हैं? या झूठ बोलकर भूल नहीं की। अब कई प्रकार के झूठ हैं। अल्लाह तआला ने मुसलमानों को तो यह कहा है, एक मोमिन को कहा है कि मामूली भी झूठ नहीं बोलना, तुम्हारी हर बात में सच्चाई होनी चाहिए। फ़रमाते हैं या कम से कम दिल की भवानाओं दृढ़ता नहीं की, जो भी दिल में बातें पैदा होती हैं उन पर फिर स्थापित नहीं रहे। कितने लोग होंगे ऐसे? आप कहते हैं कि मैं वास्तव में कह सकता हूँ कि

ऐसे लोग बहुत ही कम होंगे। जो इन बातों की छूट रखते हैं जिन्होंने किसी को दुख न पहुंचाया हो, किसी का शिकवा न किया हो, शंकित न हों, झूठ न बोला हो, दिल में बुरा विचार न लाए हों। फरमाते हैं ऐसे बहुत कम लोग होंगे जो इन बातों की छूट रखते हैं और अल्लाह तआला से डरते हों। ये सब काम अगर नहीं तो इसलिए नहीं कि अल्लाह तआला का डर और भय है। आप फरमाते हैं कि अन्यथा अक्सर ऐसे लोग मिलेंगे जो लगभग झूठ और हर समय उनकी मज्लिसों में दूसरों का शिकवा और शिकायत होती रहती है और वे तरह तरह से अपने कमज़ोर और बुजुर्ग भाइयों को दुख देते हैं। आप अपनी मज्लिसों की समीक्षा कर लें। हर कोई ख़ुद देखे तो नज़र आएगा कि बैठ कर लोगों की बुराईयां की जाती हैं, उपहास किया जाता है, छोटी-छोटी बातों को उछाला जाता है, उस पर हंसी ठट्ठा किया है और फिर इसी वजह से फिर रंजिशें पैदा होती हैं। तो यह है नेकियों की गुणवत्ता कि इन चीज़ों से बचना है जिनसे बचने की एक मोमिन से उम्मीद की जाती है।

फिर आप फरमाते हैं "अल्लाह तआला फरमाता है कि पहला कदम यह है कि इंसान तक्वा धारण करे।" फरमाया " मैं इस समय बुरे कार्यों को विस्तार से वर्णन नहीं कर सकता। कुरआन शरीफ में प्रथम से आख़िर तक आदेशों और मनाही के विवरण मौजूद हैं। क्या काम करने हैं क्या नहीं करने उनके विवरण कुरआन में मौजूद हैं और एक मोमिन को कुरआन शरीफ पढ़ना चाहिए और समझना भी चाहिए। फरमाया कि "और कई सौ शाखाएं विभिन्न प्रकार के आदेशों के बयान किए हैं। सारांश यह कहता हूँ कि अल्लाह तआला को कभी स्वीकार नहीं कि पृथ्वी पर फसाद करें। अल्लाह तआला दुनिया में एकता फैलाना चाहता है लेकिन जो व्यक्ति अपने भाई को रंज पहुंचाता है, अत्याचार और विश्वासघात करता है वह एकता का दुश्मन है। " इकाई नहीं पैदा हो सकती इससे, प्रेम नहीं पैदा हो सकता, भाईचारा नहीं पैदा हो सकता। फरमाया कि, वह एकता का दुश्मन है। जब तक यह दुष्ट विचार दिल से दूर न हों कभी संभव नहीं कि सच्ची एकता फैले। यही कारण है कि यह कदम सबसे अधिक है पहले रखा।" एक जमाअत होने में यही आशीर्वाद है कि एक इकाई स्थापित हो, एकता स्थापित हो और यही उद्देश्य है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आने का और यही उद्देश्य था महदी मौऊद अलैहिस्सालम के आने का कि मुसलमानों को एक हाथ पर एकत्रित करें। उम्मते वाहिदा बनाएं।

फिर आप फरमाते हैं, "आम तौर पर यह देखा जाता है कि ज्यादातर लोग एक मज्लिस में बैठे हुए जब इस प्रकार की बातों को सुनते हैं, उनके दिल प्रभावित होते हैं, और वे अच्छी तरह से समझते हैं।" अर्थात नेकी जो बातें की जा रही हैं सुनते हैं इस समय ख़ुत्बा दिया जा रहा है, बैठे हैं लोग सुन रहे हैं, दिल प्रभावित हो जाते हैं, उनमें से कुछ के। लोग मुझे लिखते भी रहते हैं, लेकिन फरमाया, "... लेकिन जब इस मज्लिस से अलग होते हैं और उनकी ज़रूरतों और दोस्तों से मिलते हैं, तो फिर वही रंग उन में आ जाता है और इन चीजों को एक बार फिर भूल जाते हैं।" जो नेकी की बातें सुन कर आते हैं उन्हें वे भूल जाते हैं, इसलिए मैं यह कहता हूं, कि बार-बार हमें इन बातों को दोहराना चाहिए और ध्यान में रखना चाहिए ताकि हमें भूलने से पहले याददिहानी हो जाए। और फरमाया कि "... वह पहला काम का तरीका धारण करते हैं। इससे बचना चाहिए। जिन सुहबतों तथा मज्लिसों में इस प्रकार की बातें हो रही हों इन से अलग हो जाना ज़रूरी है और साथ ही यह भी याद रखना चाहिए कि इन बुरी चीजों के घटकों का ज्ञान हो क्योंकि किसी चीज़ की चाहत के लिए ज्ञान का होना बहुत ज़रूरी है। अर्थात किसी चीज़ की आदमी इच्छा कर रहा हो इस की मांग कर रहा हो तो इस के लिए आवश्यक है कि इस का ज्ञान भी हो कि वह क्या चीज़ है? अच्छी या बुरी है अच्छाई का भी ज्ञान होना चाहिए और बुराई का भी ज्ञान होना चाहिए ताकि अगर बुरी हो तो उसे छोड़ दे और अच्छी हो तो उस को अपना ले।

फरमाया कि "जब तक किसी चीज़ का ज्ञान न हो इसे कैसे प्राप्त कर सकते हैं?" कुरआन शरीफ ने बार-बार विस्तार दिया है। अत: बार-बार कुरआन को पढ़ो, और तुम्हें चाहिए कि बुरे कर्मों का विवरण लिखते जाओ, और इन बुराइयों से बचने के लिए अल्लाह तआला की कृपा और समर्थन के साथ फिर से प्रयास करो। यह तक्वा का पहला कदम होगा, (बुराइयों से बचना।) जब तुम इस प्रकार की कोशिश करोगे, तो अल्लाह तआला फिर तुम्हें सशक्त करेगा (बचने के लिए) और काफूरी शर्बत तुम्हें दिया जाएगा। जिस से तुम्हारे गुनाहों की भावनाएं बिल्कुल ठंडी हो जाएंगी। कपूर के बारे में वैद्य कहते हैं कि भावनाओं को ठंडा करने के लिए यह प्रयोग होता है। लोग दवाइयों में भी प्रयोग करते हैं। यहां रूहानी बीमारी के लिए भी आपने इसके उपमा दी है कि जब बुराइयों से बचाओगे तो यही तुम्हारे लिए का काफ़ूरी शरबत बन जाएगा। जिससे धीरे से तुम्हारे गुनाह ठंडे होते जाएंगे, समाप्त होते जाएंगे।" इसके बाद नेकियां ही होंगी जब तक इंसान मुतक्की नहीं बनता यह जाम इसे नहीं दिया जाता और न इस की इबादतें और दुआओं में कबूलियत का रंग पैदा होता है। इबादतों और दुआओं को कुबूल करवाना है तो इसके लिए बुनियादी चीज़ यही है कि इंसान बुराइयों से रुके और नेकियों को अपनाए। यह तक्वा है, दुआएं कबूल कराने के लिए भी यह ज़रूरी शर्त है क्योंकि अल्लाह फरमाता है إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ (अल्माईद: 28) अर्थात नि:सन्देह अल्लाह तआला मुत्तकियों की ही इबादत को स्वीकार करता है यह बिल्कुल सच्ची बात है कि नमाज़ रोज़ा भी मुत्तकियों का कबूल होता है। इन इबादतों की कबूलियत क्या है और इस से अभिप्राय क्या है? इस को स्पष्ट करते हुए आप ने फरमाया कि

नमाज की क़बूलियत से अभिप्राय यह है कि नमाज के प्रभाव और बरकतें नमाज़ पढ़ने वाले में पैदा हो गए हैं। और जब तक वे बरकतें और प्रभाव पैदा ना हों तो केवल टकरे हैं। फरमाया कि इस नमाज़ रोज़ा से क्या लाभ है जब किसी मस्जिद में नमाज़ पढ़ी और वहीं किसी दूसरे की शिकायत और शिकवा कर दिया। लोग पूछते हैं कि हमें कैसे पता लगे कि अल्लाह तआला ने नमाज़ कबूल की इसकी निशानी यही है कि नमाज़ के बाद इबादतों को देखना चाहिए। बड़ी और छोटी बुराइयां हमसे दूर हो रही हैं। नफरत पैदा हो रही है। हमारी अन्दर नेकियां पैदा करने की तरफ ज्यादा ध्यान पैदा हो रहा है, सच्चाई की तरफ हमारे कदम बढ़ रहे हैं। अगर नहीं तो फरमाया इसका अर्थ यह है कि वह भी यह टकरें हैं फरमाया के मस्जिद में नमाज़ पढ़ी वहीं दूसरे की शिकायत और शिकवा शुरू कर दिया। कुधरणा शुरू हो गई, अमानत में ख़यानत कर दी। मज्लिसों की भी अमानतें होती हैं उहेदेदारों को विशेष रूप से इस बात के ध्यान रखना चाहिए। कि अपनी जमाअत की मज्लिस की बातें न अपने घरों में, न किसी ग़ैर ज़रूरी आदमी के सामने करने की ज़रूरत है। बहुत सारी बातें इसीलिए पैदा होती हैं कि अपनी अमानत की बातें बाहर निकल रही होती हैं। किसी के मकाम पर लोग हसद करने लग जाते हैं किसी की इज्जत पर हमला कर देते हैं। आप फरमाते हैं अगर ऐसी बुराइयों में व्याप्त है तो फिर नमाज़ ने इसे क्या लाभ दिया?

बहुत से नौजवान हैं, मुझे व्यक्तिगत तौर पर पता लगता रहता है, लिखते भी रहते हैं कि कुछ उहदेदारों. अपने बड़ों की ऐसी बातें देखकर ही जमाअत से पहले आहिस्ता आहिस्ता दूर हट मस्जिद से दूर हटे, फिर अल्लाह तआला से दूर हो जाते हैं। तो फिर इस प्रकार की नमाज़े न तो केवल यह कि नमाज पढ़ने वाला को कोई फायदा नहीं पहुंचाती कुछ लोगों को नुकसान पहुंच रही होती हैं। अगर अपनी अगली नस्ल को संभालना है तो सबसे पहले अपने अंदर तक्वा पैदा करने की ज़रूरत है आप ने फरमाया कि पहली मंज़िल और मुश्किल उस इन्सान के लिए जो मोमिन बनना चाहता है यही है कि बुरे कामों से परहेज़ करे और यही तक्वा है।

फिर आप फरमाते हैं कि यह भी याद रखो कि तक्वा इस बात का नाम नहीं की मोटी मोटी बुराइयों से बचे बल्कि बारीक से बारीक बुराइयों से बचता रहे। जैसे ठट्ठा और हंसी की मज्लिस में बैठना जहां दूसरों को ग़लत प्रकार से मज़ाक उड़ाया जा रहा हो, या इस तरह की मज्लिसों में बैठना जहां तआला और उसके रसूल का अपमान हो या उसके भाई की शान पर हमला हो रहा हो यद्यपि उन की हां में हां न मिलाई हो मगर अल्लाह तआला के नज़दीक है यह भी बुरा है। इस तरह की मज्लिसों में बैठ कर ऐसे लोगों की बातें सुनना है भी अल्लाह तआला के निकट बुरा है चाहे बातों में शामिल न हो रहा हो कि इस तरह की बातें क्यों ? यह उन लोगों के काम हैं जिन कि दिल में बीमारी है क्योंकि उनके दिल में बुराई को पूरी तरह समझने की शक्ति होती तो वह क्यों इस तरह की मज्लिसों में जाकर इस तरह की बातें सुनते। फिर आप फरमाते हैं याद रखो इस तरह की बातें सुनने वाला भी करने वाले की तरह होता है। जो लोग ज़बान से इस तरह की बातें करते हैं वे तो स्पष्ट पकड़ के नीचे आ गए। क्योंकि उन्होंने गुनाह को किया परन्तु जो चुपके से बैठे सह वह भी गुनाह के बदला का शिकार होंगे। वे भी गुनाह करने वाले बन रहे होंगे उन को भी परिणाम भुगतना। इस हिस्से को बड़े ध्यान से याद रखो। आप फरमाते हैं कि इसको बड़ी तवज्जो से याद रखो। कुरआन शरीफ को बार बार पढ़ कर सोचो कि अल्लाह तआला का आदेश है इसलिए बहुत याद रखने की चीज़ है।

अत: ग़लत बातों को सुन कर ख़ामोश रहने वाले वहीं बैठे रह कर बातें सुनने

वाले मज़ लेकर बातें सुन रहे हैं वे भी अल्लाह तआला के निकट जवाब देंगे। फिर इस बात को और भी स्पष्ट किया कि मोमिन केवल इस बात पर ख़ुश नहीं हो जाता कि उस ने कोई बुराई नहीं की पहले भी इस का वर्णन हो चुका है। ये तो दूसरे धर्मों औ्क क़ौमों की शरीफ हैं बल्कि इन लोगों में भी अधिकतर इस प्रकार ले लोगों की है जो बुराइयां नहीं करते। अत: आप फरमाते हैं कि

कुछ लोग हिंदुओं, ईसाइयों और अन्य क़ौमों में पाए जाते हैं जो कुछ गुनाह नहीं करते जैसे कुछ झूठ नहीं बोलते, किसी का माल नहीं खाते, कर्ज़ दबा नहीं लेते बल्कि वापस करते हैं। मामलों तथा लने देन में भी पक्के होते हैं। परन्तु ख़ुदा तआला फरमाता है कि इतनी ही बात नहीं जिस से वह संतुष्ट हो जाए हैं। बुराइयों से बचना चाहिए और उसके मुकाबला में नेकियां करनी चाहिए इसके बिना ईमानदार नहीं। जो लोग इस पर गर्व करते हैं कि वह बुराई नहीं करता है वह अज्ञान है। इस्लाम मनुष्य को इसी सीमा तक नहीं पहुंचता है और इसे छोड़ता बल्कि वह दोनों खंडों को पूरा करना चाहता है, कि बुराइयों को पूर्ण रूप से छोड़ दो और नेकियों को पूरी ईमानदारी से करो। जब तक यह दोनों बातें न हों नजात नहीं हो सकती।

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात जिल्द 8 पेज 371 से 378 संस्करण 1985 मुद्रित यू.के)

आप फरमाते हैं कि "मैं फिर जमाअत को ताकीद करता हूँ कि तुम तक्वा और पवित्रता में तरक्की करो तो अल्लाह तआला तुम्हारे साथ होगा। إِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوْا وَّالَّذِينَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ (अन्नहल 129)(नि:सन्देह अल्लाह तआला उन लोगों के साथ है जिन्होंने तक्वा धारण किया और जो नेकियां करने वाले हैं और उपकार करने वाले हैं)फरमाया " खूब याद रखो कि अगर तक्वा धारण न किया और नेकी से जिसे ख़ुदा चाहता है बहुत हिस्सा न लोगे तो अल्लाह तआला सबसे पहले तुम को हलाक करेगा क्योंकि तुम ने एक सच्चाई को माना है और फिर व्यावहारिक रूप से इसका इन्कार करते हो।" यानी ज़माने के इमाम को माना है, यह दावा किया है कि हम बाकी मुसलमानों से बेहतर हैं और नेकियों पर चलने वाले हैं लेकिन व्यावहारिक रूप में अगर तक्वा नहीं तो इससे इनकार कर रहो हो। "इस बात पर कभी भरोसा न करो और अहंकार करने वाले मत बनो कि बैअत कर लगी है। जब तक पूरा तक्वा धारण न करोगे तब तक न बचोगे। ख़ुदा तआला किसी का कोई रिश्तेदार नहीं है और न ही उसने कोई छूट स्वीकार कर ली है। जो लोग हमारे विरोधी हैं वे भी उस की पैदायश हैं, और तुम भी इस की सृष्टि हो।" जो विरोधी हैं वे भी अल्लाह तआला के प्राणी हैं। हम भी अल्लाह तआला के प्राणी हैं। "केवल आस्था की बात हरगिज़ स्वीकार न होगी जब तक तुम्हारा कथन तथा कर्म एक न हो।" आस्था तो दूसरे मुसलमानों की भी यही है कि अल्लाह तआला एक है, आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं, कुरआन अंतिम शरई किताब है यह तो विश्वास हमारा भी है, उनका भी है लेकिन अगर कथनी और करनी में विरोधाभास है तो बस विश्वास काम नहीं करेगा। वास्तविक चीज़ कर्म है जिस को हमें करना चाहिए। अत: इस्लाम लाना पर्याप्त नहीं है, अहमदी होना पर्याप्त नहीं है अपने आप को अल्लाह तआला की आज्ञाओं के अनुसार ढालना चाहिए और वास्तविक मोमिन बनना ज़रूरी है जिस की अल्लाह तआला हमसे उम्मीद करता है।

फिर आप फरमाते हैं, 'ख़ुदा तआला चाहता है कि व्यावहारिक सच्चाई दिखाओ (यानी स्पष्ट रूप से सच्चाई को दिखाओ) ताकि वह तुम्हारे साथ हो। दया, गुण, कृपा, उत्तम कार्य, करुणा और स्नेह में अगर कमी रखोगे तो मुझे पता है और बार-बार मैं यह बतला चुका हूं कि सब से पहली यही जमाअत हलाक होने वाली व्यक्ति होगा। " फरमाया कि " मूसा अलैहिस्सलाम के समय जब उसकी उम्मत ने अल्लाह तआला की आज्ञाओं का महत्तव न दिया बावजूद मूसा उनमें मौजूद था लेकिन फिर भी बिजली से हलाक हुए। "

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 7 पृष्ठ 144-145 प्रकाशन 1985 ई), तो फिर आप फरमाते हैं तुम्हारा क्या विचार है कि तुम केवल मेरी बैअत से बच जाओगे!

फिर धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता करने की नसीहत देते हुए आप सहाबा के उदाहरण देते हुए फरमाते हैं कि " यह स्थिति इन्सान के अंदर पैदा हो जाना आसान बात नहीं ... " कि धर्म को दुनिया में प्राथमिकत करना और तक्वा पैदा होना, आप फ़रमाते हैं सहाबा ने जो नमूना दिखाया वह क्या था। ख़ुद तआला के मार्ग में जान देने को तैय्यार हो गए। अत: " यह स्थिति व्यक्ति के अंदर पैदा हो जाना आसान बात नहीं है कि वह अल्लाह तआला के रास्ते में जान देने को तैयार हो जाए लेकिन सहाबा की स्थिति बताती है कि उन्होंने इस कर्तव्य को निभाया। जब उन्हें आदेश हुआ कि इस राह में जान दे दो तो फिर वे दुनिया की तरफ नहीं झुके। तो यह आवश्यक बात है कि तुम धर्म को दुनिया में प्राथमिकता कर लो। "

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 8 पृष्ठ 297 संस्करण 1985 मुद्रित यू.के)

आजकल में ख़ुत्बों में सहाबा की सीरत बयान कर रहा हूँ बहुत सारे, अजीब अजीब घटनाएं सामने आती हैं किस प्रकार की कुरबानिआं देने वाले थे, कैसे अपने अंदर नेकियाँ पैदा करने वाले थे, कैसे तक्वा में बढ़ने वाले थे, क्या इबादतों की गुणवत्ता थी, इसीलिए कि हमारे सामने वे नमूने आ जाएं जिनके बारे में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरे सहाबा जो हैं ये सितारों की तरह हैं, जिसके पीछे भी चलोगे वे तुम्हें सही रास्ते की ओर ले जाएगा।

(मिरकातुल मफ़ातीह सरह मशिकातुल मसाबीह जिल्द 11 पृष्ठ 162 हदीस 6018 किताबुल मनाकिब अध्याय मनाक़िबुस्सहाबा मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बैरूत 2001 ई) तो ये हमारे लिए आदर्श हैं।

आप फरमाते हैं कि " याद रखो जिस का उसूल दुनिया है फिर वह इस जमाअत में शामिल है अल्लाह तआला के निकट वह इस जमाअत में नहीं है। अल्लाह तआला के निकट वही इस जमाअत में प्रवेश और शामिल है जो दुनिया से दूर हो। ' इसे स्पष्ट भी आगे कर दिया। फरमाते हैं कि यह कोई मत विचार करे कि मैं इस विचार को नष्ट हो जाऊंगा। यह ख़ुदा तआला को पहचानने के रास्ते से दूर ले जाने वाला है। " कि दुनिया की तरफ मैं गया तो मैं नष्ट हो जाऊँगा। परमाया " अल्लाह तआला कभी उस व्यक्ति को जो केवल उसी का हो जाता है बर्बाद नहीं करता बल्कि वह ख़ुद इसका मुतकफ्फिल हो जाता है। अल्लाह तआला करीम है। वह व्यक्ति जो उस के रास्ते में कुछ खो देता है वही पाता है। मैं सच कहता हूँ कि अल्लाह तआला उन्हीं को प्यार करता है और उन्हीं की औलाद बरकत वाली होती है जो अल्लाह तआला की आज्ञाओं का पालन करता है। और यह कभी नहीं हुआ है और न होगा कि ख़ुदा तआला का सच्चा आज्ञा पालन करने वाला हो या उस की औलाद नष्ट हो जाए। दुनिया उन लोगों की ही बर्बाद होती है जो ख़ुदा तआला को छोड़कर दुनिया पर झुकते हैं। क्या यह सच नहीं है कि हर व्यक्ति की रस्सी अल्लाह तआला के हाथों में है। इसके बिना कोई मुकदमा जीत नहीं सकता, कोई सफलता हासिल नहीं हो सकती और किसी प्रकार का आराम और राहत उपलब्ध नहीं हो सकती। "फरमाते हैं कि " धन हो सकता है " पैसे बन जाए, पैसा आ जाए किसी के पास " लेकिन यह कौन कह सकता है कि " यह पैसा जो है " मरने के बाद यह पत्नी या बच्चों के ज़रूर काम आएगा। कई उदाहरण हमारे सामने आते हैं कि उनकी संपत्ति मृत्यु के बाद नष्ट हो जाती है। फरमाया, "इन चीजों पर विचार करें और अपने अंदर एक पवित्र बदलाव पैदा करो।"

" फिर आप फरमाते हैं कि " ... अभी तक जो परिभाषा की जाती है " जमाअत की या अहमदियों की " वह अल्लाह तआला की सत्तारी करा रही है " अल्लाह तआला छिपा रहा है " लेकिन जब कोई परीक्षा और इम्तेहान आता है तो वह इन्सान को नंगा कर के दिका देती है। इस समय वह रोग जो दिल में होता है अपना पूरा असर करके मनुष्य को मार देता है। "

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 8 पृष्ठ 297-298 संस्करण 1985 मुद्रित यू.के)

उस अपने ज़माने की जब आप बात कर रहे हैं, उस समय तो धर्मपरायणता और नेकी की गुणवत्ता आज की तुलना में बहुत अधिक थी लेकिन आप के दिल में उस समय भी एक दर्द था। आज हम अपनी हालत को देखकर ख़ुद की समीक्षा कर सकते हैं कि हमारी हालत क्या है। हमारा दावा क्या है और हमारी नेकी की गुणवत्ता क्या है?

फिर इसको आगे स्पष्टीकरण फरमाते हुए कि सच्चा मोमिन कौन है आप फरमाते हैं " बेशक याद रखें कि अल्लाह तआला के पास वही मोमिन और बैअत में प्रवेश करता है जो धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता कर ले जैसा कि वह बैअत करते समय कहता है। अगर दुनिया की स्वार्थों को प्रथम करता है तो वह इस इकरार को तोड़ता है और अल्लाह तआला के निकट वह दोषी ठहरता है। " ... फरमाया " बेशक याद रखो कि जब तक मनुष्य की व्यावहारिक स्थिति सही न हो ज़बान कुछ चीज़ नहीं। यह केवल ज़बानी बातें हैं ... सच्चा विश्वास ही है जो दिल में प्रवेश करे और इस के कर्मों को अपने प्रभाव से रंगीन कर दे। सच्चा ईमान अबूबकर और अन्य सहाबा रिज़वानुल्लाह अलैहिमु अजमईन का था क्योंकि जिन्होंने अल्लाह तआला के रास्ते में माल तो माल जान तक को दे दिया और उसकी परवाह भी नहीं की ...। "

फरमाया " मुझे हमेशा विचार आता है और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अल्लाह तआला की महानता का नक्श दिल पर हो जाता है। और कैसी बरकत वाली वह क़ौम थी और आप की कुव्वते कुदसिया का कैसा मज़बूत प्रभाव था कि इस क़ौम को इस मुकाम तक पहुंचा दिया। सोचो कि आप ने उन को कहां से कहां तक पहुचा दिया। एक स्थिति और समय उन पर ऐसा था कि सभी मना किए गए काम उनके लिए मां के दूध की तरह थे " यानी मां के दूध की तरह सभी दोष करने वाले थे। " चोरी, शराब पीना, व्यभिचार, फिस्क़ और फजूर सब कुछ था। उनमें कौन सा गुनाह नहीं था। लेकिन आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़ैज़ साहचर्य और प्रशिक्षण से उन पर वह असर हुआ और उनकी हालत में वह बदलाव पैदा हुआ कि खुद आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि ने उसकी गवाही दी और कहा अल्लाह अल्लाह फी असहाबी मानो इन्सानियत का लिबास उतारकर अल्लाह की अभिव्यक्ति हो गए थे और उनकी हालत फिरश्तों की सी हो गई थी जो يَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ (अन्नहल: 51) " यानी जो कहा जाता है वही करते हैं उसके मिसदाक़ बन गए, ठीक ऐसी ही अवस्था सहाबा की बन गई थी उनकी दिली इच्छा और स्वाभाविक भावना बिल्कुल दूर हो गए थे।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 8 पृष्ठ 296-297 संस्करण 1985 मुद्रित यू.के)

फिर आप फरमाते हैं कि बैअत करने के बाद एक अहमदी को क्या करना चाहिए और कैसे उसका जमाअत के साथ मज़बूत संबंध होना चाहिए और अपने ज़माने में आप के साथ और फिर आपने फ़रमाया कि मेरे बाद जो ख़िलाफत का सिलसिला शुरू हो जाएगा इसके साथ जुड़े रहना कि वह स्थायी सिलसिला तुम्हारे साथ चलेगा।

आप फरमाते हैं, " जिस शाखा का पेड़ से संबंध नहीं रहता अंतत: वह सूख जाती है। जो व्यक्ति ज़िन्दा ईमान रखता है वह दुनिया की परवाह नहीं करता है। दुनिया हर तरह से मिल जाती है। धर्म को दुनिया में प्राथमिकता देने वाला ही धन्य है लेकिन जो दुनिया को धर्म पर प्राथमिकता देता है वह एक मृत की तरह है जो कभी सच्ची सहायता का मुंह नहीं देखता। यह बैअत तब काम आ सकती है जब धर्म को प्राथमिकता दी जाए और तरक्की करने की कोशिश हो। बैअत एक बीज है जो आज बोया गया अब अगर कोई किसान केवल पृथ्वी पर बीज बोने पर ही संतोष करे " बीज बो दे और कह दे कि ठीक हो गया सब कुछ 'और फल प्राप्त करने वाले के जो परिणाम हैं उन में से किसी को अदा नहीं करता। न ज़मीन को ठीक करे, न ही सिंचाई करें, न ही इस ज़मीन में उचित उर्वरक दे, न ही इसे काफी संरक्षित करे, क्या वह किसान एक फल की उम्मीद कर सकता है? "यह क्षेत्र भी कृषि का है। यहां आने वाले कई नवागंतुक अब शरणार्थी स्थिति के या परिवार के साथ गांवों से आ रहे हैं, वे यह भी जानते हैं कि यदि फसल कटाई के बाद फसल की उचित देखभाल न की जाए तो इसे फल नहीं लगता। तो यहां, आने वालों को नए आने वालों को इस संबंध में यह भी कह दूं कि अल्लाह तआला ने यहां आपकी स्थिति में सुधार किया है, धार्मिक स्वतंत्रता, इबादत करने का अधिकार और स्वतंत्र रूप से अपने धर्म को व्यक्त कर सकते हैं। इसलिए प्रत्येक अहमदी के लिए यह ज़रूरी है और विशेष रूप से जो लोग पाकिस्तान से यहां आए हैं, वे धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करें और अल्लाह तआला के आदेशों का पालन करने के लिए अपनी सभी शक्तियों का उपयोग करें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं ने कहा, "जो अपने बाग़ या फसल की उचित देखभाल नहीं करेगा ।" ... ... इस का खेत ज़रूर नष्ट होगा और बर्बाद होगा। खेत उसी का होगा जो पूरा मोमिन ज़मींदार होगा। अत: एक तरह का बीज रोपण आप ने भी आज किया है। " उन लोगों को समझा रहे हैं जो आप लोगों के सामने मौजूद थे और आज हम जानते हैं कि हम इस के सम्बोधित हैं हम ने भी बीज को बोया है, अहमदियत को स्वीकार किया है। "ख़ुदा तआला जानता है कि किस के भाग्य में क्या है लेकिन भाग्यशाली वह है जो इस बीज को सुरक्षित रखे और तरक्की के लिए दुआ करता रहता है। जैसे नमाज़ों में एक तरह का परिवर्तन होना चाहिए।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 7 पृष्ठ 37-38 संस्करण 1985 मुद्रित यू.के)

नमाज़ों की तरफ ध्यान होनी चाहिए। केवल यह नहीं कि हम ने मस्जिदें बना लीं, मस्जिदें बना लीं तो उनका हक अदा करने की भी आवश्यकता है।

फिर एक बड़ी नसीहत आप ने जमाअत को की जो मैं प्रस्तुत करती हूं। आप फरमाते हैं, "आज कल समय बहुत ख़राब हो रहा है। किस्म किस्म का शिर्क,बिदअत और कई परेशानियां पैदा हो गईं हैं। बैअत के समय जो इकरार किया जाता है कि धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता दूंगा यह इकरार ख़ुदा तआला के सामने इकरार है। अब चाहिए कि इस पर मौत तक ख़ूब क़ायम रहे वरना समझो कि बैअत नहीं की। और अगर क़ामय रहोगे तो अल्लाह तआला धर्म और दुनिया में बरकत देगा। "धर्म में भी बरकत देगा, दुनिया में भी बरकत देगा।" अपने अल्लाह तआला की इच्छा के अनुसार पूरा तक्वा धारण करो। यह नाज़ुक ज़माना है। अल्लाह का ग़ुस्सा प्रकट हो रहा है। वह ख़ुद को अल्लाह तआला की इच्छा के अनुसार बनाएगा, वह अपनी रूह और आपनी संतान पर रहम करेगा।

फरमाया, "देखो,इन्सान रोटी खाता है। जब तक तृप्त होने के अनुसार पूरी मात्रा न खा ले तो उसकी भूख नहीं जाती। "

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 5 पृष्ठ 75 संस्करण 1985 मुद्रित यू.के)

अल्लाह तआला के क्रोध के बारे में भी आप देख लें आप फरमा रहे हैं कि अल्लाह तआला का क्रोध नाज़िल हो रहा है। अब हम देखते हैं कि नियमित यह आंकड़े हैं कि दुनिया में भूकंप और तूफ़ान और आपदाएं पिछले सौ साल में आई हैं पहले नहीं आई। यहाँ भी तूफ़ान आते रहते हैं, बारिशें भी होती हैं और अनगिनत हो रही हैं और हर बार यही कहा जाता है कि पांच सौ साल का उदाहरण है, इतने सौ साल का उदाहरण है या इतने दशकों का उदाहरण है, यह क्या है? समझने की जरूरत है ये लोग तो नहीं समझते जो सांसारिक हैं लेकिन हमें यह समझना चाहिए कि यह अल्लाह तआला के क्रोध से व्यक्त है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस के बारे में चेतावनी दी हुई है इसलिए हमें अपने सुधार की तरफ भी ध्यान देना होगा और दुनिया को भी बाताना चाहिए कि यह कोई साधारण आपदाएं नही हैं। इन की भविष्यवाणी सौ साल पूर्व हो चुकी है और इन से बचने का एक मात्र उपाय यह है कि इन्सान अल्लाह तआला की तरफ आए। अब भी अगर होश नहीं किया तो फिर बचना बहुत कठिन है। इसी तरह इन्सान फिर अपने लिए भी बहुत सी मुश्किलें पैदा कर ली हैं। युद्धों हैं, युद्ध किए जा रहे हैं, एक दूसरे पर अत्याचार किया जा रहा है और उसका फिर अंतिम परिणाम यही निकलता है कि जब अल्लाह तआला के निकट अत्याचार चरम पर पहुंच जाएगा, हमें तो नज़र आ रहा है कि चरम हो रहा है लेकिन अल्लाह तआला बहुत ढील देता है। जब वह अत्याचार अल्लाह तआला के निकट चरम को पहुंच गया, तो फिर इन ज़ुल्म करने वाली क़ौमों की भी तबाही है। और केवल वे लोग ही बच सकते हैं जिनके बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक शेर में फरमाया कि

आग है पर आग से वे सब बचाए जाएंगे
जो कि रखते हैं ख़ुदाए ज़ुल अजायब से प्यार

(दुर्रेसमीन उर्दू पेज 154)

अत: इस तरफ बहुत ध्यान देने की ज़रूरत है, अपने आप को बचाने के लिए भी दुनिया को बचाने के लिए भी हमें कोशिश करने की ज़रूरत है। और इसके लिए हमें अपनी सभी शक्तियों और क्षमताओं का उपयोग करना होगा ताकि हम यह प्राप्त कर सकें।

आप फरमाते हैं, मनुष्य रोटी खाता है जब तक कि पूरी तप्ति के अनुसार खाना न खा ले ..", पेट न बर ले, "उस की भूख नहीं जाती है। यदि वह एक लुक्मा रोटी का खा ले, एक थोड़ा सा टुकड़ा खा ले, एक कण खाए, "क्या वह भूख से मुक्ति पा जाएगा? कदापि नहीं। अगर वह पानी की एक बूंद अपने गले में डाल ले, तो वह कण उसे हरगिज़ नहीं बचाएगा पाएगा, बल्कि वह इस बूंद से मर जाएगा।" फरमाया कि, "जान की सुरक्षा के लिए वह मात्रा जिस से वह ज़िन्दा रह सकता है जब तक न खा ले और न पी ले तब तक ज़िन्दा नहीं रह सकता।" एक विशेष मात्रा है, और जब तक भूखा इस हद तक नहीं खाएगा और प्यासा इस हद तक पानी को नहीं पीएगा बच नहीं सकता।" यही अवस्था इन्सान की धर्म का अवस्था की हा जब तक इस की धार्मिकता इस अवस्था न हो की तृप्त हो जाए बच नहीं सकता।। धार्मकिता तक्वा ख़ुदा के आदेश के आज्ञा पालन को इस सीमा तक करना चाहिए जैसे रोटी और पानी को इस सीमा तक खाते और पीते हैं जिस से भूख और प्यास चली जाती है।"

फरमाया "ख़ूब याद रखना चाहिए कि अल्लाह तआला की कुछ बातों को न मानना उस की सब बातों को ही छोड़ना होता है। यदि एक हिस्सा शैतान का है और अल्लाह तआला का तो एक अल्लाह तआला हिस्सा को पसन्द नहीं करता है यह सिलसिला उस का इस वजह से है कि मनुष्य अल्लाह तआला की तरफ आए।

यद्यपि ख़ुदा तआला की तरफ आना बहुत मुश्किल है और मृत्यु की तरह है, लेकिन अन्तिम जीवन भी इसी में है। जो अपने अंदर से शैतान का हिस्सा निकालकर फेंक देता है वह मुबारक आदमी होता है और उसके घर और नफ्स और शहर सभी जगह उसकी बरकत पहुंचती है लेकिन अगर इस के हिस्सा में ही थोड़ा आया है तो वह बरकत न होगी। जब तक कि बैअत का वास्तविक स्वीकार न हो बैअत कुछ चीज़ नहीं है। जिस तरह से एक इन्सान के आगे तुम बहुत सी बातें ज़बान से करो लेकिन व्यावहारिक रूप से कुछ भी न करो तो वह ख़ुश न होगा। इसी तरह, अल्लाह तआला का मामला है। वह सब ग़ैरत वालों की तुलना में अधिक ग़ैरत वाला है। क्या हो सकता है एक तो तुम उस की इताअत करो फिर इधर उस के दुश्मनों की भी इताअत करो।? इसका नाम पाखंड है। इन्सान को चाहिए कि इस अवस्था में ज़ैद तथा बकर की परवाह न करे। मरते समय तक स्थापित रहो? अर्थात धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता का वादा।

फरमाया'' बुराई की दो किस्में हैं एक ख़ुदा के साथ शरीक(साझा) करना, उसकी महानता को न जानना, उसकी इबादत और आज्ञाकारिता में सुस्ती दूसरी यह कि उसके बन्दों पर करूणा न करना, उनके अधिकारों को अदा न करना। अब चाहिए की दोनों प्रकार की बुराइयों को न चाहो। अल्लाह तआला की इताअत पर स्थापित रहो। जो वादा तुम ने बैअत में किया है इस पर स्थापित रहो। कुरआन को बहुत ध्यान से पढ़ो इस पर अनुसरण करो। प्रत्येक प्रकार के उपहास तथा ठट्ठे बेहूदा बातों ओर मुश्रेकाना बातों से बचो। पांचों समय नमाज़ को स्थापित रखो। ताकि कोई इस प्रकार का अल्लाह तआला का आदेशन हो जिसे तुम टाल दो। शरीर को साफ रखो और अपने दिल को पूरी तरह से, द्वैष और हसद से पवित्र रको। ये वे चीज़ें हैं जो अल्लाह तआला तुम में चाहते है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 5, पृष्ठ 75-76 संस्करण 1985 ई, इंग्लैंड)

अल्लाह तआला करे कि हम बैअत का हक अदा करते हुए अपने अन्दर पवित्र परिवर्तन पैदा करने वाले हों। दुनिया में रहते हुए, धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देने वाले हों। आप अलैहिस्सलाम के उपदेशों का पालन करने वाले हों और जो बैअतकी शर्तों में दसवीं शर्त है। इताअत बिल-मारूफ़ की आप की आज्ञाकारिता की वास्तविक अर्थ समझते हुए आज्ञाकारिता की इस गुणवत्ता को पहुंचने वाले हों ताकि अल्लाह तआला के उन फज़्लों का वारिस बनें। जिनका वादा अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से फरमाया है।

☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيلِ لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

पृष्ठ 1 का शेष

प्रकाश प्रदान कर सकती थी, परन्तु हदीसों ने उनको तबाह किया। इसी प्रकार हज़रत मसीह के समय वे यहूदी तबाह हो गए★जो अहले हदीस कहलाते थे। कुछ समय से उन्होंने तौरात को छोड़ दिया था और जैसा कि आज तक उनकी आस्था है। उनका मज़हब यह था कि हदीस तौरात पर निर्णायक है। उनमें ऐसी हदीसों का बाहुल्य था कि जब तक एलिया दोबारा अपने इस भौतिक अस्तित्व के साथ आकाश से न उतरे तब तक उनका मसीह मौऊद नहीं आएगा। इन हदीसों ने उनको सख्त ठोकर में डाल दिया और वे लोग इन हदीसों पर निर्भर होकर हज़रत मसीह के इस विश्लेषण को स्वीकार न कर सके कि इल्यास से अभिप्राय यूहन्ना अर्थात् यहया नबी है जो इल्यास के स्वभाव और तबियत पर आया और उपमा के तौर पर उसका अस्तित्व लिया है। अत: समस्त ठोकरों का कारण उनकी हदीसें थीं, जो अन्तत: उनके बेईमान होने का कारण बन गईं। संभव है वे लोग इन हदीसों के अर्थों में भी ग़लती करते हों या हदीसों में कुछ मनुष्यों के शब्द सम्मिलित हो गए हों। संभवत: मुसलमानों को इस घटना की सूचना न होगी कि यहूदियों में हज़रत मसीह का इन्कार करने वाले अहले हदीस ही थे। उन्होंने उन पर शोर मचाया, कुफ्र का फ़तवा लिखा और उनको काफ़िर घोषित कर दिया और कहा कि यह मनुष्य ख़ुदा की पुस्तक को नहीं मानता। ख़ुदा ने इल्यास के दोबारा आने की सूचना दी, पर यह उस भविष्यवाणी का विश्लेषण करता है और बिना किसी उचित प्रमाण के उन सूचनाओं को किसी और तरफ़ खींच कर ले जाता है।★ उन्होंने हज़रत मसीह का नाम केवल काफ़िर ही नहीं अपितु अधर्मी भी रखा और कहा कि अगर यह व्यक्ति सच्चा है तो फिर मूसा का धर्म झूठा है। वह उनके लिए **फैज आवज** का युग (अन्धकार का समय) था। झूठी हदीसों ने उन्हें धोखा दिया। अत: हदीसों का अध्ययन करते समय यह विचार कर लेना चाहिए कि इस से पूर्व एक क़ौम हदीस को तौरात पर निर्णायक ठहराकर इस दशा तक पहुँच चुकी है कि उन्होंने एक सच्चे नबी को काफ़िर और दज्जाल कहा और उसका इन्कार कर दिया। पर मुसलमानों के लिए सही बुख़ारी अत्यन्त बरकत वाली और लाभप्रद पुस्तक है। यह वही पुस्तक है जिसमें स्पष्ट रूप में लिखा है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मृत्यु को प्राप्त हो गए हैं। इसी प्रकार हदीस की पुस्तक मुस्लिम और अन्य हदीसों की पुस्तकें अध्यात्म विद्या और समस्याओं के समाधान का अपार भण्डार अपने अन्दर रखती हैं और इस सतर्कता के साथ उन पर अमल करना आवश्यक है कि कोई विषय ऐसा न हो जो क़ुर्आन सुन्नत और उन हदीसों के विरुद्ध हो जो क़ुर्आन के अनुकूल हैं।

★**हाशिया :-** जिस समय हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर कुफ्र का फ़तवा लिखा गया उस समय वह पोलूस भी कुफ्र का फ़तवा लगाने वाले समूह में सम्मिलित था, जिसने बाद में स्वयं को रसूल मसीह के शब्द से विख्यात किया। यह व्यक्ति हज़रत मसीह के जीवन में आप का बहुत बड़ा शत्रु था। हज़रत मसीह के नाम पर जितनी भी इन्जीलें लिखी गई हैं उनमें से एक में भी यह भविष्यवाणी नहीं है कि मेरे बाद पोलूस तौबा करके रसूल बन जाएगा। हमें इस व्यक्ति के पूर्व चाल-चलन के विषय में लिखने की आवश्यकता नहीं कि ईसाई भली-भांति जानते हैं। अफ़सोस है कि यह वही व्यक्ति है जिसने हज़रत मसीह को जब तक वह इस देश में रहे बहुत दु:ख दिया था और जब वह सलीब से मुक्ति पाकर कश्मीर की ओर चले गए तो उसने एक झूठे स्वप्न द्वारा स्वयं को हवारियों में दाख़िल किया और तीन ख़ुदाओं का मामला गढ़ा और ईसाइयों पर सुअर को वैध कर दिया, जबकि वह तौरात की दृष्टि से हमेशा के लिए अवैध था और मदिरा को ख़ूब बढ़ावा दिया और इन्जीली आस्था में तीन ख़ुदाओं की कल्पना का समावेश कर दिया ताकि इन समस्त नए अनुचित कर्मों से यूनानी मूर्ति पूजक प्रसन्न हो जाएं। इसी से।

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 55 से 57)

☆ ☆ ☆
☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

हैं, मुलाकातें हैं, तब्लीग़ है संगोष्ठियां हैं, अन्य कार्यक्रम भी हैं। विज्ञापन, पुस्तिकाएं और बुकस्टाल हैं। यह एक बहुत बड़ा काम है। यही कारण है कि जो बजट बनाएं इस का आगे ब्रैक डाऊन करें और फिर काम करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, विज्ञापन दें। बड़े शहर में, वर्ष में 40 हज़ार क्रोनन खर्च किए जाएंगे। विज्ञापनों से कम से परिचय तो हो जाएगा कि आप कौन हैं। ख़ुद को पेश करने के लिए आपको नए माध्यम तलाश करने होंगे। एक बार अच्छी तर्क समझा दें। बाकी अल्लाह तआला पर छोड़ दें।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि तब्लीग़ के लिए सफर का बजट तब्लीग़ के बजट में होगा। चन्दा के अधिग्रहण के लिए, और तरबियती प्रोग्रामों के लिए बजट तरबियत में बजट में होगा। *हुज़ूर अनवर ने सैक्रेटरी तहरीक जदीद बराए नौमुबाईन से पूछा कि पिछले दस वर्षों के कितने नौमुबाईन हैं और कितने हैं जिन के साथ सम्पर्क स्थापित हैं। सैक्रेटरी ने कहा कि दो को छोड़कर, सब से संपर्क और संबंध थे, दो विवाह के लिए अहमदी हुए थे शादी टूट गई तो वह वापस चले गए।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि आमला के सदस्यों को एक एक बैअत का लक्ष्य दें और मुरब्बियों को दो दो बैअतों का लक्ष्य दें। हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि तब्लीग़ के लिए विज्ञापन दें। समाचार पत्रों से संपर्क करें और नई दिशाएं निकालें।

सैक्रेटरी अमूरे ख़ारजा को निर्देशित करते हुए हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि आपको प्रेस और मीडिया से संपर्क करना चाहिए। यदि आप कोई गाइड लाईन बनाएंगे तो अन्य पीढ़ी आप से बेहतर कार्यक्रम बना लेंगी। साल की योजना बनाएं पांच साल के लिए योजना बनाएं।

यहां 349 संसद सदस्य हैं, जिनमें से आप के छह के साथ संबंध हैं। दूसरें से भी संबंध बनाएं। अपने रिश्ते बढ़ाएं। ख़ारजा की एक टीम बनों। किशोरों को अपने साथ रखें।

नेशनल सैक्रेटरी माल ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए कहा कि 382 लोगों में से 158 लोग मूसी हैं। वसीयत करने वालों की कुल संख्या 266 है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि अभी तक कमाने वाले आदमियों में से 50 प्रतिशत वसीयत करने वालों के लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाए। सैक्रेटरी मल ने कहा कि वसीयत करने वालों के चन्दे का स्तर दूसरों से बेहतर है। इस पर हुज़ूर ने फरमाया कि दूसरों से गुणवत्ता बेहतर है।

*नेशनल सैक्रेटरी प्रकाशन ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि ख़ुद्दाम ने किताब "पाप से मुक्ति कैसे संभव है?" का स्वीडिश भाषा में ट्रांसलेशन किया है। इसी प्रकार एक और पुस्तक की समीक्षा की गई है। हुज़ूर अनवर ने इस पर कहा, और किताबों का अनुवाद करें और कमेटी को अपने काम को तेज़ करने के लिए कहा। नेशनल सैक्रेटरी जायदाद ने कहा कि अब हमारी पास जायदादें हैं। एक गोथन बर्ग में दो माल्मो में एक स्टाकहोम में और एक लोलियो में।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि आपकी माल्मो की पुरानी इमारत इसलिए ख़राब हुआ है कि आप इस का रखरखाव नहीं करते हैं। आपके पास नियमित रखरखाव का बजट होना चाहिए और वहां के सैक्रेटरी जायदाद को हर महीने रिपोर्ट देनी चाहिए कि क्या काम हुआ है। नियमित प्रत्येक माह रिपोर्ट लिया करें। समय पर मुरम्मत न करवाने से नुकसान होता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह ने माल्मो के पुराने मिश्न हाऊस बैयतुल हमद का विस्तार से जायज़ा लिया और इस बारे में अमीर साहिब स्वीडन को कुछ प्रशासनिक हिदायतें दीं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद महमूद माल्मो के निर्माण के खर्च, मस्जिद के फण्ड और आगामी आने वाले बिलों की अदायगी और अनुमानित खर्च का विस्तार से समीक्षा की और इस बारे में प्रशासन को निर्देश दिए।

हुज़ूर अनवर ने निर्देश देते हुए कहा कि हर विभाग का काम है कि अपना बजट बनाए कि हम ने इस साल ये ये काम करने हैं और अपने कार्यों के मद्देनज़र अपना बजट तैयार करे। अगर विभाग का बजट होगा तो काम करेगा। * नेश्नल सैक्रेटरी ज़याफत से सम्बोधित होते हुए हुज़ूर अनवर ने फरमाया आज कल तो आप बहुत व्यस्त हैं। आने वाले मेहमानों और जमाअत के मेहमानों की ज़याफत की तौफीक़ मिल रही है।

सैक्रेटरी उद्योग और व्यापार को संबोधित करते हुए हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि उद्योग और व्यापार करें और अपने कार्यक्रम बनाऐं।

* नेशनल सैक्रेटरी तरबियत से हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि यह एक प्रमुख विभाग है। यदि आपकी तरबियत हो जाएगी तो आपकी सभी समस्याओं का समाधान हो जाएगा। आप समीक्षा कर सकते हैं कि कितने घरों में डिश हैं। एम.टी.ए के साथ प्रत्येक को संबद्ध करें। नमाज़ों के अदा करने की तरफ ध्यान दें, कुरआन करीम की तिलावत की तरफ ध्यान दिलवाएं। तरबियत के कार्यक्रम बनाएँ और हर किसी को सक्रिय करें। जिन को माली कुर्बानी चन्दों को अदा करने की तरफ ध्यान नहीं उन्हें ध्यान दिलाएं ।

राष्ट्रीय सैक्रेटरी सअई तथा बसरी ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि पिछले चार महीनों से एक वृत्तचित्र पर काम कर रहे हैं। इसी प्रकार, वेब साइट पर कुछ कार्यक्रम और इनट्रवियू डाले हैं। हुज़ूर अनवर ने फरमाया इस्लाही कमेटी के बारे में पूछा कि यह कमेटी क्या काम कर रही है? सैक्रेटरी तरबियत इस समिति का अध्यक्ष होता है उसे पता ही नहीं। इस कमेटी बने हुए एक साल हो गया है। सैक्रेटरी तरबियत को इस का पता होना चाहिए। * राष्ट्रीय शिक्षा सैक्रेटरी से हुज़ूर अनवर ने पूछा कि क्या आप जानते हैं कि कितने छात्र विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में जा रहे हैं।? हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि ख़ुद्दाम, लज्ना के साथ मिलकर, छात्रों के डेटा प्राप्त करें और अपना रिकॉर्ड पूरा करें। ख़ुद्दाम तथा लज्ना की एसोसिएशन बनाएं।

* नेश्नल सैक्रेटरी वक्फे नौ को,हिदायत देते हुए हुज़ूर अनवर ने फरमाया आपने स्लैबस बनाया हुआ है। हर महीने अपनी प्रगति की रिपोर्ट भेजें। जो स्लैबस तैयार हए हैं उन्हें लज्ना को भी दें, वे अपनी कक्षाओं का ख़ुद प्रबंध करेंगी। अगर लज्ना समझती है कि उन्हें मुरब्बी से सहायता लने की आवश्यकता है तो वे मुरब्बी से सहायता ले सकती हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि वक्फे नौ के प्रोग्रामों की ज़िम्मेदारी सैक्रेटरी वक्फे नौ की है मुरब्बी की नहीं है। मुरब्बी का दूसरा काम तब्लीग़ और तरबियत करना है लेकिन आप अपने कार्यक्रमों में उनसे मदद ले सकते हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया अब तो 21 साल वाला स्लैबस भी आ गया है। यह स्लैबस भी लज्ना को दें और सदर लज्ना अपनी सहायक सदर की सहायता से वाक्फाते नौ की कक्षाओं की व्यवस्था करे। अब ये बड़ी आयु की लड़कियां हैं, अपनी कक्षाओं और कार्यक्रमों के लिए आज़ाद हों। अगर मुरब्बी सिलसिला या अमीर ने उन की कक्षाओं में कोई तकरीर करनी है तो वह पर्दे के पीछे से करे।

राष्ट्रीय सैक्रेटरी, वक्फे नौ, लजना से वाक्फाते नौ की रिपोर्ट ले लिया करें ।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया एक तो वाकफीन नौ और वाकफ़ात नौ ने पंद्रह साल की उम्र में अपना वक्फ फार्म भरना है और फिर जब विश्वविद्यालय से अपनी शिक्षा समाप्त करें तो फिर अपना दोबारा वक्फे नौ फार्म भिजवाएं।

राष्ट्रीय सैक्रेटरी वक्फ नौ ने बताया कि वाकफीन की कुल संख्या 122 है जिनमें 19 ख़ुद्दाम और 26 लजनात हैं, 21 अत्फाल हैं, 16 नासिरात हैं और बाकी 40 छोटी उम्र के बच्चे बच्चियां हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, रसाला इस्माईल और मर्यम मंगवाएं। हुज़ूर अनवर ने फरमाया: अपना नियमित बजट बनाएं और ये रसाले मंगवाएं। जिन को उर्दू अंग्रेज़ी,भाषा नहीं आती उन्हें पत्रिकाओं के साथ स्वीडिश भाषा में लेखों का अनुवाद करके दें। रसाला पहले चली जाए बाद में अलग से अनुवाद करे के भिजवाएं। नेश्नल सैक्रेटरी अमूरे आम्मा ने रिपोर्ट पेश करते हुए कहा कि नए रिफीयजीज़ आ रहे हैं और उन के लिए काम की तलाश है। उनके लिए नौकरियों की तलाश कर रहे हैं।

हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि छात्र भी समीक्षा करें कि कितने छात्र काम कर रहे हैं या अपनी शिक्षा और पेशे से हटकर मजबूरन दूसरी job कर रहे हैं। उनकी भी समीक्षा की जानी चाहिए।

* नेश्नल सैक्रेटरी वक्फे जदीद ने बताया कि हमारा चन्दा वक्फे जदीद का वादा 2 लाख 46 हज़ार 953 करोंज़ है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: बच्चों को भी साथ जोड़ें। बच्चों से भी चन्दा लें।

* मुहासिब ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए बताया कि नियमित हिसाब का रिकॉर्ड रखा जाता है। हर महीने का हिसाब करता हूं। * नेशनल सैक्रेटरी वसाया ने बताया कि यहां कमाने वालों की संख्या 382 है और उनमें से वसीयत करने वालों की संख्या 158 है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, आप आधेके लगभग हैं। अपना लक्ष्य प्राप्त करें।

* भीतरी लेखा परीक्षक ने अपनी रिपोर्ट देते हुए कहा कि हर तीन महीने में नियमित आडिट करता हूं।

हुज़ूर अनवर ने सैक्रेटरी रिश्ता नाता को निर्देश दिया कि जिन के रिश्ते नहीं

हुए उन की सूचि और नाम इन्ट्रनेशनल कमेटी लंदन को भेजें और मुझे हर महीने अपनी रिपोर्ट भेजें। हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि आपका डेटा सुरक्षित स्थान पर होना चाहिए और आपकी समिति की हर महीने मीटिंग होनी चाहिए। अपने काम की समीक्षा करें और प्रत्येक सदस्य को बताएं कि तुम्हारा काम है कि तीन रिश्ते करवाएं। हुज़ूर अनवर ने फरमाया , यहां जो डेटा है, वह केंद्रीय सैक्रेटरी रिश्ता नाता के पास ही रहेगा।हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि लजना रिश्ता नाता के हवाले से अपने तौर पर विशेष कार्यक्रम रख सकती है कि रिश्ते कैसे तय होने चाहिए। कैसे व्यवहार होने चाहिए। वार्तालाप में कई मुद्दे सामने आएंगे। हुज़ूर अनवर ने फरमाया , अपने सभी जमाअतों में सैक्रेटरी रिश्ते नाता को सक्रिय करें। हुज़ूर अनवर ने नमाज़ों में हाज़री के हवाले से फरमाया कि क्या दूरी अधिक है याद करवाते रहा करें। ख़ुत्बों में नमाज़ों के बारे में ध्यान दिलाता रहता हूं। आप का काम है कि ध्यान दिलाते रहा करें। जो दूर घर हैं वहां चार पांच घर मिल कर सेन्टर बना लें नमाज़ पढ़ लिया करें।

ख़ुदा तआला ने फरमाया है कि नसीहत करते जाओ। नसीहत करना तुम्हारा काम है। पुलीस फोर्स बनना हमारा काम नहीं है। उहेदेदार ध्यान दिलाते रहें। नसीहत करने का आदेश है। अत: नसीहत करते जाएं।

सैक्रेटरी तरबियत का काम है कि कार्यक्रम बनाए और इस तरह आरगनाईज़ करे कि मस्जिद आने वाले अपने साथ बिठाकर दूसरों को भी नमाज़ के लिए ले लिए ले आएं। जिन के साथ रिश्ते हैं उन को साथ ले आया करें।

अंत में, अमीर साहिब स्वीडन ने अनुरोध किया कि अब हमारे पास माल्मो में एक बड़ा केंद्र है। स्कैंडिनेवियाई देशों का जलसा कभी स्वीडन में और कभी नॉर्वे में हो जाया करे। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया , जमाअत के सामने ने एक नियमित प्रस्ताव रख कर इसे फिर भेजें।

नेशनल मज्लिस आमला स्वीडन की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मीटिंग साढ़े आठ बजे समाप्त हुई। इस के बाद आमला के मेम्बरों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर ख़िंचवाई।

इसके बाद कार्यक्रम के अनुसार आठ बज कर पच्चीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ आदरणीय मामूनुर्रशीद साहिब अमीर जमाअत अहमदिया स्वीडन के घर तशरीफ़ ले गए और रात का ख़ाना भोजन खाया। बाद में, नौ बज कर 50 मिन्ट पर यहां से वापसी हुई। दस बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद नासिर में पधार कर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश पर पधारे।

23 मई 2016 (सोमवार)

गौथनबर्ग से और लंदन को रवानगी

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह तीन बजकर 45 मिनट पर तशरीफ़ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ के अदा करने के बाद,हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर गए।

आज स्वीडन से लंदन प्रस्थान का दिन था। मस्जिद नासिर के बाहरी परिसर में सुबह से ही जमाअत के दोस्त मर्द, महिलाओं और बच्चे बच्चियां अपने प्यारे आक़ा को अलविदा कहने के लिए जमा थे। बच्चियों के समूह विदाई नज़्में

हर गाम पर हो फिरिश्तों को लश्कर हो साथ साथ
हर मुल्क में तुम्हारी हिफाज़त ख़ुदा करे

पढ़ रहे थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुब्ह नौ बजे अपने निवास स्थान से बाहर तशरीफ ले आए। और कुछ देर अपने आशिकों के मध्य में रहे। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने सामूहिक रूप से दुआ करवाई और गोथन बर्ग के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर गए।

पुलिस ने हुज़ूर अनवर के वाहन की सुरक्षा की। 9 बजकर 40 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ एयरपोर्ट पर तशरीफ़ लाए और प्रोटोकॉल अधिकारी ने हुज़ूर अनवर को Receive किया और स्वागत किया और हुज़ूर अनवर विशेष लाउंज में पधारे। हुज़ूर अनवर के आगमन से पहले सामान बुकिंग करके बुकिंग कार्ड पूरा किए गए थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने लाऊज में कुछ देर आराम किया। यहां से सुबह 10:45 पर, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला जहाज़ पर सवार होने के लिए रवाना हुए। विशेष व्यवस्था के तहत, हुज़ूर अनवर की गाड़ी जहाज़ की सीढ़ियों तक लाई गई थी। प्रोटोकॉल अधिकारी जहाज़ के दरवाज़ा तक हुज़ूर अनवर को छोड़ने आए था। इस अवसर पर आदरणीय मामूनुर्रशीद साहिब अमीर जमाअत स्वीडन, आदरणीय आग़ा याह्या ख़ान मुबल्लिग़ इन्चार्ज स्वीडन और आदरणीय ज़ीशान साहिब इन्चार्ज सुरक्षा टीम ने भी हुज़ूर अनवर को जहाज़ के द्वार पर अलविदा कहा। हुज़ूर अनवर जहाज़ के अंदर चलो गए।

ब्रिटिश एयरवेज उड़ान BA 791 ग्यारह बज कर 15 मिनट पर गोथनबर्ग एयरपोर्ट से लंदन (यू.के) के हीथ्रो हवाई अड्डे के लिए रवाना हुए। ब्रिटेन का समय स्वीडन से एक घंटा पहले है। लगभग दो घंटे की उड़ान के बाद ब्रिटेन के स्थानीय समय के अनुसार सवा बारह बजे विमान लंदन के हीथ्रो अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरा। जहाज़ के द्वार पर प्रोटोकॉल अधिकारी ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का स्वागत किया और अपने साथ विशेष लाउंज में ले आए जहां आदरणीय रफीक़ अहमद हयात साहिब अमीर जमाअत यू.के, आदरणीय साहिबज़ादा मिर्ज़ा वक़ास अहमद साहिब सदर मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया, आदरणीय मुहम्मद अहमद नासिर साहिब अधिकारी सुरक्षा विशेष ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का स्वागत किया और हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

आप्रवासन अधिकारी ने इसी लाउंज में आकर पासपोर्ट देखा। यहां एयरपोर्ट से दोपहर एक बजे रवाना होकर लगभग एक बजकर चालीस मिनट पर मस्जिद फज़्ल लंदन में पदारे जहां जमाअत के दोस्त एक बड़ी संख्या में अपने प्यारे आक़ा का स्वागत करने आए थे। मस्जिद के बाहरी इलाके में एक तरफ महिलाएं और बच्चियां खड़ी थीं और दूसरी तरफ मर्द तथा बच्चे खड़े थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया ने अपना हाथ ऊंचा कर के सब को अस्सलामो अलैकुम कहा और अपने निवास स्थान पर पधारे।हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के डेनमार्क और स्वीडन के इस ऐतिहासिक और दूरगामी दौरा में जिन ख़ुश नसीब लोगों को सफर में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ उन के नाम रिकार्ड के लिए नीचे लिखे जाते हैं

हज़रत सैयदा अमुतल सबूह साहिबा मद्दे ज़िल्ला आली (हरम सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़)। आदरणीय मुनीर अहमद जावेद साहिब (निजी सैक्रेटरी)। आदरणीय मुबारक अहमद ज़फर साहिब (अतिरिक्त वकीलुल माल लंदन) आदरणीय अबीद वाहिद ख़ान (इन्चार्ज प्रेस और मीडिया ऑफिस लंदन) आदरणीय मेजर महमूद अहमद साहिब (अधिकारी सुरक्षा स्पेशल लंदन) अदरमीयण नासिर अहमद सईद साहिब (रक्षा विभाग) आदरणीय सख़ावत अली बाजवा साहिब (रक्षा विभाग) आदरणीय मुहसेन अवान साहिब (रक्षा विभाग) विनीत अब्दुल मजीद ताहिर (एडीशनल वकील, तबशीर लंदन) इसके अलावा आदरणीय महमूद अहमद ख़ान और आदरणीय ज़फर अहमद साहिब (रक्षा विभाग लंदन) एक कार्यक्रम के अधीन हुज़ूर अनवर की डेनमार्क आगमन से पहले, डेनमार्क पहुंचे थे और वहां से यह दोनों सदस्य काफिले में शामिल हुए।

इसके अलावा MTA अंतरराष्ट्रीय यू.के के निम्नलिखित सदस्यों ने इस दौरे के दौरान ख़ुत्बा जुम्अः, मस्जिद महमूद माल्मो का उद्घाटन और दोनों देशों में Reception के समारोह, हुज़ूर अनवर के इनट्रवियू और अन्य कार्यक्रमों की रिकॉर्डिंग और डेनमार्क और स्वीडन से Live प्रसारण के लिए इस यात्रा में साथ रहे ।आदरणीय मुनीर अहमद औदा साहिब। आदरणीय सोहराब जशान साहिब, आदरणीय सफीरुद्दीन साहिब, आदरणीय अताउल अव्वल साहिब आदरणीय अदनान ज़ाहिद साहिब आदरणीय ज़ाकिर ज़कीउल्लाह अहमद साहिब, आदरणीय सईद वसीम साहिब

आदरणीय उमैर आलीम साहिब इन्चार्ज मख़ज़ने तस्वीर भी इस दौरा में शामिल थे।जर्मनी से डॉ आदरणीय अतहर ज़ुबैर साहिब डेनमार्क और स्वीडन के इस सफर में डाक्टर के रूप में ड्यूटी के कर्तव्य पर इस सफर में रहे। अल्लाह तआला उन सभी के लिए यह सफर मुबारक करें। इसके अलावा मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया जर्मनी से दस ख़ुद्दाम पर आधारित सुरक्षा टीम हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क आगमन से पहले ही डेनमार्क पहुंची थी और फिर डेनमार्क और स्वीडन के सारे यात्रा में साथ रही। इन सभी खुद्दाम ने भी बहुत चुस्ती से और ख़ुशी के साथ अपने कर्तव्यों को अदा किया। फजज़ा-हमुल्लाह अहसनल जज़ा।

(समाप्त)

☆ ☆ ☆

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिजरत की घटना तथा अल्लाह तआला के समर्थन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र पत्नी हज़रत आयशा[रज़ि] वर्णन करती हैं कि जब से मैंने होश संभाला मैंने अपने माता पिता को मुसलमान पाया। कोई दिन ऐसा नहीं गुज़रता था जिसमें हुज़ूर सुबह या शाम हमारे घर न आते हों। जब मुसलमानों की परीक्षा बढ़ गई और कुफ़्फ़ार ने अत्याचार की सीमा कर दी तो हज़रत अबूबकर भी हब्शा की तरफ़ हिजरत की निय्यत से घर से निकल खड़े हुए। जब आप "बर्कुल ग़मादा" स्थान पर पहुंचे तो इब्न दुग़ना मिला वह कारह क़बीले का सरदार था उसने कहा: हे अबू बकर आप कहाँ जाते हैं? अबूबकर ने कहा: मुझे मेरे लोगों ने निकाल दिया है। अब चाहता हूं कि दुनिया में घूमुं और फिरूं और अल्लाह की इबादत करूं। इब्ने दुग़ना ने कहा। हे अबूबकर तेरे जैसे को न शहर से निकलना चाहिए न निकाला जाना चाहिए। तू मिट्टी हुई नेकियों को प्राप्त करता है। रिश्तेदारों से उत्तम व्यवहार करता है। गिरे पडों को उठाता है। मेहमानों की मेहमान नवाज़ी करता है। राष्ट्र की सच्ची जरूरतों में मदद करने को इच्छुक रहता है। मैं तुझे शरण देता हूँ। अपने शहर में वापस चलो और अल्लाह की इबादत करो। (आप को कोई कुछ नहीं कह सकता) अत: अबूबकर वापस आ गए। इब्न दुग़ना भी आप के साथ आया। शाम के समय क़ुरैश के सम्मानित लोगों में घूमा फिरा और उन्हें कहा अबूबकर जैसे लोगों को लाभ देने वाले व्यक्ति को न निकालना चाहिए। क्या तुम ऐसे व्यक्ति को निकालते हो जो मिटी हुई नेकियों को जीवित करता है। रिश्तेदारों से उत्तम व्यवहार करता है। गिरे पड़ों को उठाता है। मेहमानों की मेहमान नवाज़ी करता है। राष्ट्र की सच्ची जरूरतों में मदद करने को इच्छुक रहता है। क़ुरैश ने इब्ने दुग़ना की इन बातों को न झुठलाया और उसके द्वारा दी गई शरण स्वीकार कर ली। लेकिन यह कहा कि उन्हें कहें कि अपने घर में ही अल्लाह तआला की इबादत करें। वहाँ ही नमाज़ पढ़ें और कुरान की तिलावत करें। लोगों के सामने ऐसा कर के हमें दु:ख न दें क्योंकि हमें डर है कि हमारी महिलाएं और बच्चे प्रभावित होंगे और फित्ने में पड़ेंगे।

इसलिए इब्ने दुग़ना ने अबूबकर के पास जाकर यह बातें कह दीं इन नियमों का पालन करते हुए हज़रत अबूबकर घर में ही अल्लाह की इबादत करते और लोगों के सामने न नमाज़ पढ़ते न तिलावत करते। फिर कुछ समय के बाद हज़रत अबू बकर के मन में आया और उन्होंने अपने घर के आंगन में एक मस्जिद बना ली। इस में नमाज़ पढ़ने लगे और बैठ कर तिलावत करने लगे। इसलिए मुशरिकीन महिलाओं और बच्चों की आप के पास एक भीड़ होने लगी। वे बड़े आश्चर्य से आप को देखते क्योंकि हज़रत अबु बकर बहुत आह और ग़ुज़ारी करने वाले व्यक्ति थे। जब कुआन पढ़ते तो आप को अपनी आंखों पर नियंत्रण नहीं रहता और रो रो कर तिलावत करते। इस बात से क़ुरैश के सरदार घबरा गए उन्होंने इब्ने दुग़ना को बुलावा भेजा और जब वह आया तो उसे कहा। हम ने आप की वजह से उनको शरण दी थी और शर्त रखी थी कि वह अपने घर में इबादत करे, लेकिन उसने इससे अधिक किया और घर के आंगन में मस्जिद बना ली और घोषणा कर के अपने रब्ब की इबादत करता है हम डरते हैं कि हमारी महिलाऐं और बच्चे प्रभावित होंगे। आप उसे मना करें तो अगर वह अपने रब्ब की इबादत अपने घर के अंदर तक सीमित रखना मान ले तो ठीक, वरना उसे कहें कि वह अपनी सुरक्षा आप को वापस लौटा दे। क्योंकि हमें यह पसंद नहीं है कि हम आपके द्वारा दी गई सुरक्षा का अपमान करें लेकिन हम उनको भी घोषणा कर के ऐसा करने नहीं देंगे। हज़रत आयशा कहती हैं कि इब्ने दुग़ना अबूबकर के पास आया और कहा। आप जानते हैं कि मैंने किन शर्तों पर आप को सुरक्षा दी थी, या तो उन पर स्थापित रहिए या फिर मेरी सुरक्षा वापस कर दीजिए क्योंकि मुझे यह पसंद नहीं कि अरब यह सुनें कि मेरी दी हुई सुरक्षा का अपमान किया गया है। इस पर हज़रत अबूबकर ने कहा मैं आप की सुरक्षा आप को वापस करता हूँ और अल्लाह तआला की सुरक्षा और उसकी दी गई सुरक्षा पर ख़ुश हूँ।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन दिनों मक्का में थे और हुज़ूर ने मुसलमानों को बता दिया था कि मैंने सपने में हिजरत का स्थान देखा है दो घाटियों के बीच खजूरों के बगीचों वाली जगह है। इसलिए हुज़ूर के इस आदेश पर कुछ सहाबा मदीना की ओर हिजरत कर गए और हब्शा की ओर जिन लोगों ने हिजरत की थी उनमें से कई मदीना वापस चले आए। हज़रत अबु बकर भी मदीना की ओर हिजरत करने की तैयारी करने लगे। जब हुज़ूर को पता चला तो आप ने हज़रत अबुबकर को कहा। अभी ठहरो। क्योंकि उम्मीद है कि मुझे भी हिजरत की अनुमति मिल जाएगी। इस पर हज़रत अबूबकर कहा मेरे माता पिता आप पर फिदा हों, क्या वास्तव में आप को उम्मीद है ? आपने कहा हाँ। इसलिए वे रुक गए लक्ष्य था कि वह हुज़ूर के साथ ही हिजरत करेंगे। उन्होंने अपनी दो ऊंटनियों को चार महीने तक घर में कीकर के पते का चारा डालकर अच्छी तरह तैयार किया।

हज़रत आयशा कहती हैं कि एक दिन हम अपने घर में बैठे थे कि ठीक दोपहर के समय किसी ने आकर हज़रत अबुबकर को सूचना दी कि सिर पर चादर ओढ़े आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चले आ रहे हैं। हालांकि आप इस समय कभी हमारे घर न आए थे। हज़रत अबूबकर घबराए उठे और कहा। मेरे माँ बाप आप पर फिदा हूं। ख़ुदा की क़सम! कोई बड़ी महत्त्वपूर्ण बात है जिसकी वजह से आप इस समय आए हैं।

हुज़ूर जब आए तो अपने अंदर आने की अनुमति मांगी। अनुमति मिलने पर अंदर पधारे। अबूबकर को कहा (मुझे एक महत्त्वपूर्ण बात करनी है) जो उस समय यहां बैठे हैं उन्हें कमरे से बाहर भेज दो। अबूबकर ने पूछा। मेरे पिता आप पर फिदा हों! यह आप के घर के लोग हैं (और ग़ैर नहीं हैं राज़ रखने वाले हैं) फिर हुज़ूर ने हज़रत अबू बकर को बताया कि मुझे मक्का से हिजरत करने की अनुमति मिल गई है। इस पर उन्होंने अर्ज़ किया। क्या हुज़ूर मुझे भी साथ ले चलेंगे? आपने कहा। हाँ। फिर हज़रत अबूबकर ने पूछा। हुज़ूर मेरा बाप आप पर फिदा हो इन दो ऊंटनियों में से एक आप ले लें। आप ने कहा ठीक है लेकिन इसकी क़ीमत दूँगा।

हज़रत आयशा कहती हैं हमने दोनों का सफर का सामान तैयार किया और दोनों के लिए रास्ते की चीज़ें एक बैग में डालीं। (बैग का मुंह बान्धने के लिए उस समय कुछ नहीं मिल रही था) मेरी बहन अस्मा ने अपने कमरबंद का एक टुकड़ा फाड़ा और उससे बैग का मुंह बांध दिया इसलिए अस्मा का उपनाम "ज़ातुन्नताक़" पड़ गया। हज़रत आयशा कहती कि फिर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और अबूबकर मक्का से निकल कर सौर नामक पहाड़ की एक गुफा में जा छिपे और तीन रात वहीं छिपे रहे। मेरे भाई अब्दुल्लाह इन दिनों बिल्कुल जवान थे, बड़े मजबूत और मेहनती। वह दिन भर मक्का में क़ुरैश के पास रहते और जो कुछ सुनते उसे याद कर लेते। रात को वह गुफा में चले जाते, सभी समाचार बताते और मुँह अंधेरे सुबह के समय वापस मक्का में चले आते जैसे यह रात भर मक्का में ही रहे हों।

हज़रत अबू बकर के एक गुलाम आमिर पुत्र फहीरह थे। वह अपनी बकरियां चरा लिया करते थे। ईशा के समीप आमिर बकरियां गुफा के पास ले आते और ताज़ा दूध दोह कर हुज़ूर और अबूबकर को पिलाते और मुँह अंधेरे वापस चले जाते। हर रात ऐसा ही होता।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबूबकर ने बनी वैल के एक आदमी को मार्गदर्शन के लिए बतौर नौकर रख लिया। मार्गदर्शन में वह बड़ा विशेषज्ञ था। चप्पे चप्पे से परिचित था। हालांकि वह नास्तिक था लेकिन विश्वसनीय था। इसलिए हुज़ूर ने दोनों सवारियां उस के सुपुर्द कर दीं और उसे ताकीद की कि तीन रातों के बाद सुबह सवारियां लेकर गुफा के पास पहुंच जाए। इस तरह आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, अबूबकर और आमिर पुत्र फहीरह और रास्ता दिखाने वाला गुफा से चले। मार्ग दर्शक ने मदीने की ओर जाने वाला तटीय रास्ता अपनाया।

इब्ने शहाब कहते हैं कि अब्दुल रहमान पुत्र मालिक मदलजी जो सुराका का भतीजा था उसने मुझे बताया और यह बात अपने पिता से सुनी थी कि उसके भाई सुराका ने बताया। हमारे पास कुफ़्फ़ार क़ुरैश के दूत आए और आकर बताया कि क़ुरैश ने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और अबूबकर को मारने वाले या जीवित पकड़कर लाने वाले को सौ सौ ऊंट बदला निर्धारित किया है। अर्थात प्रत्येक का बदला सौ ऊंट दिया जाएगा। एक दिन मैं अपने लोगों में बैठा हुआ था। एक व्यक्ति आया और उसने कहा, हे सुराका! मैं ने अभी समुद्री तट के पास कुछ लोग चलते हुए देखे हैं (मुझ से वे दूर था इसलिए पहचान तो नहीं सका लेकिन) मुझे लगता है कि मुहम्मद और उनके साथी हैं। सुराका का वर्णन है कि मैं समझ गया कि यह वही हैं लेकिन आदमी को टालने के लिए कहा। नहीं यह नहीं है। आप ने उन को देखा होगा जो अभी हमारे सामने से गुजर कर गए हैं। बहरहाल कुछ देर में सभा में बैठा रहा। फिर चुपके से उठा और घर आ गया। अपनी सेविका से कहा: टीले की ओर मेरी घोड़ी ले आओ और वहाँ मेरे आने तक उसे रोके रखो। मैंने अपना भाला लिया और घर के पिछली ओर कूद गया। कुछ दूरी तय करके

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 15-22 November 2018 Issue No. 46-47

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

और ऊंची जगहों से छिपते छिपाते में घोड़ी के पास पहुंच गया और उस पर सवार होकर उसे दौड़ाया। वह हवा हो गई। जब आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के काफिला के क़रीब पहुंचा तो मेरी घोड़ी फिसली और मैं उससे आगे जा गिरा। जल्दी से उठा अपनी तरकश से अपना हाथ बढ़ाया और उसके फाल का तीर निकाला और फाल लिया कि इन लोगों को नुकसान पुहुचां सकूंगा या नहीं। लेकिन वह तीर निकला जिसे पसंद नहीं करता था। बहरहाल मैं घोड़ी पर फिर सवार हो गया तीर की बात न मानी और घोड़ी ने मुझे काफिला के इतना क़रीब कर दिया कि मुझे आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कुरआन की तिलावत की आवाज़ सुनाई दे रही थी। हुज़ूर ने तो मुड़ कर नहीं देखा लेकिन अबूबकर बार बार मुड़ कर मेरी ओर देखते जाते थे। इस बीच मेरी घोड़ी के दोनों अगले पैर ज़मीन में घुटनों तक धंस गए। मैं इस से तेज़ी से उतरा। उसे बहुत झिड़का। वह उठी और अपने पैर निकालने की कोशिश की। जब वह सीधी खड़ी हो गई तो उसके पैर जमीन से निकलने के कारण ऐसा गुबार आसमान की ओर उठा जैसे धुआं उठता है। तब मैंने तीर से फाल लिया लेकिन वही तीर निकला जिसे पसंद नहीं करता था। इस पर मैं घबराया आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़ाफ़िले को आवाज़ दी। शांतिपूर्ण रहने का वादा किया। इस पर वह ठहर गए घोड़ी पर सवार होकर मैं काफिले के पास पहुंचा। यह जो कुछ मेरे साथ पेश आया। इस से मुझे यकीन हो गया कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जरूर विजय और सफल होंगे। इसलिए मैंने आप को बताया कि हुज़ूर आपकी क़ौम ने आपको पकड़कर लाने वाले का बदला निर्धारित किया है। अन्य परिस्थितियां भी मैंने बताईं कि लोगों के आप से संबंधित क्या इरादे हैं। मैंने यह पेशकश की कि कुछ ज़ाद राह और सामान प्रस्तुत करना चाहता हूँ। लेकिन हुज़ूर ने मेरी यह पेशकश स्वीकार न की। लेकिन यह कहा कि हमारे बारे में राज़ से काम लो और किसी को न बताओ। इस अवसर पर मैंने हुज़ूर से भी अनुरोध किया कि मुझे शांति की रचना लिख दीजिए। हुज़ूर ने आमिर पुत्र फहीरा को इर्शाद फरमाया। यह चमड़े के एक टुकड़े पर मुझे लिख दी गई। फिर हुज़ूर आगे चल पड़े।

इब्ने शहाब कहते हैं कि मुझे उरवह पुत्र ज़ुबैर ने बताया कि इस यात्रा में ज़ुबैर भी हुज़ूर से मिले जो मुसलमानों के एक वाणिज्यिक काफिला में सीरिया से वापस आ रहे थे। ज़ुबैर ने हुज़ूर और अबूबकर को सफेद कपड़े उपहार के रूप में भेंट प्रस्तुत की। जो दोनों ने पहने। उधर मदीना में मुसलमानों को यह ख़बर मिल चुकी थी कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का से निकल कर मदीना की ओर रवाना हो चुके हैं और पहुंच रहे हैं। इसलिए वे हर रोज़ सुबह के समय मदीना की ऊंचे काले पत्थर वाली चिकनी खुली जगह पर जिसे हुर्रह कहते थे आकर हुज़ूर का इंतज़ार करते और दोपहर को वापस चले जाते। एक दिन वह लंबे इंतजार के बाद वापस आए और अभी घरों में पहुँचें ही थे कि एक यहूदी अपने किसी काम के लिए एक टीले पर चढ़ा उसने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके साथियों को आते देखा जो सफेद उज्जवल कपड़े पहने हुए थे। धीरे धीरे वह स्पष्ट हो रहे थे अर्थात् करीब आ रहे थे। यह देखकर यहूदी बेइख़्तियार चिल्ला उठा और उसने पूरी आवाज के साथ शोर मचाया। हे अरबो! वह जिस का तुम कई दिनों से इंतजार कर रहे थे। मुसलमान यह सुनते ही अपने हथियार लेकर दौड़ पड़े और बड़े वालहाना तरीके से हुर्ह के मध्य में हुज़ूर का स्वागत किया। हुज़ूर मुसलमानों के साथ दाईं घूम गए ओर बनी अमरू पुत्र औफ के यहां ठहरे और यह रबी उल अव्वल की दूसरी तिथि थी। वे आने वाले लोगों के साथ बातचीत करते और हुज़ूर भविष्य की गहरी सोच में चुप बैठे थे जिन अंसार ने हुज़ूर को नहीं देखा था वह अबूबकर को ही आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम समझते। जब धूप इस तरफ आई जहां आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बेठे थे तो अबूबकर आए और अपनी चादर से आप पर साया किया। इस से लोगों ने पहचाना कि हुज़ूर आप हैं। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पुत्र अमरू के यहां दस से कुछ अधिक दिन रहे और

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ाामिस का उपदेश

"फिर इंटरनेट का दुरुपयोग यह भी आजकल बहुत बड़ी व्यर्थ बात है। उसने कई घरों को उजाड़ दिया है। एक तो यह संपर्क का बड़ा सस्ता स्रोत है तो उसके द्वारा कुछ लोग फिरते फिराते रहते हैं और पता नहीं कहाँ तक पहुँच जाते हैं। शुरू में कार्य के रूप में सब काम हो रहा होता है फिर बाद में यही कार्य आदत बन जाता है और गले का हार बन जाता है छोड़ना मुश्किल हो जाता है क्योंकि यह भी एक प्रकार का नशा है और नशा भी बुराई है। क्योंकि जो उस पर बैठते हैं कई बार जब आदत पड़ जाती है तो व्यर्थ चीज़ो की तलाश में घंटों अकारण, बे उद्‌देश्य समय बर्बाद कर रहे होते हैं। तो यह सब व्यर्थ चीजें हैं। आजकल कुछ वेबसाइटें जहां जमाअत के ख़िलाफ या जमाअत के किसी व्यक्ति के खिलाफ गंदे गलीज़ प्रचार या आरोप लगाने का सिलसिला शुरू हुआ हुआ है। तो लगाने वाले तो ख़ैर अपनी सोच में समझ रहे हैं, अपनी बुद्धि के अनुसार तो वह जमाअत को कोई नुकसान पहुंचा रहे हैं हालांकि उनकी इन व्यर्थ बातों से किसी को भी कोई हानि नहीं होती। जमाअत का शायद एक प्रतिशत वर्ग भी यह नहीं देखता हो, उसे शायद पता भी न हो। तो बहरहाल यह सभी व्यर्थ बातें हैं .. इसलिए जिस हद तक व्यर्थ बातों से बचा जा सकता है, बचना चाहिए और इस आविष्कार का बेहतर उद्‌देश्य से लाभ उठाना चाहिए।

ज्ञान बढ़ाने के लिए इंटरनेट के आविष्कार का उपयोग करें। यह नहीं कि या आपत्ति वाली वेबसाइटों खोजते रहें या इंटरनेट पर बैठ स्थायी बातें करते रहें। आजकल बातें जिसे (Chatting) कहते हैं। कई बार यह बातें मजिलसों का रूप ले लेतीं है। इस में भी फिर लोगों पर आरोप तराशियां हो रही होती हैं, लोगों का मज़ाक भी उड़ाया जा रहा होता है तो यह भी एक व्यापक पैमाने पर मजलिस का एक रूप बन चुकी है इसलिए इससे भी बचना चाहिए।"

(ख़ुत्बाते मस्रूर भाग 2 पृष्ठ 593 से 595)

☆ ☆ ☆
☆ ☆

वहां मस्जिद की स्थापना की जिसका कुर्आन में इन शब्दों में उल्लेख आता है। "ल मस्जेदुन उस्सेस अलत्तकवा ।"

हुज़ूर ने मस्जिद में नमाज़ पढ़ी। फिर आप ऊंटनी पर सवार हुए और मदीना की ओर चल पड़े। आपकी ऊँटनी वहाँ आकर बैठ गई जहां इन दिनों मस्जिद नबवी है वहाँ मुसलमान अस्थायी रूप से नमाज़ पढ़ते थे। यह जगह सुहेल और सहल नामक दो अनाथ बच्चों की थी और खजूरें सुखाने के मैदान के रूप में इस्तेमाल होती थीं। यह अनाथ बच्चे असद पुत्र ज़ुराह की निगरानी में रहते थे।

बहरहाल जब हुज़ुर की ऊँटनी वहाँ बैठी तो हुज़ूर ने कहा हमारा वास्तविक गंतव्य यही है। फिर हुज़ूर उन दोनों लड़कों को बुलाया और इस क्षेत्र की क़ीमत चुकाने के बारे में बात की ताकि आप वहां मस्जिद बनाएं तो इन दोनों बच्चों ने कहा कि हुज़ूर हम यह जगह तोहफे के रूप में आपकी सेवा में प्रस्तुत करते हैं, लेकिन हुज़ूर ने उसे स्वीकार नहीं किया और मूल्य देकर जगह खरीदी और वहां मस्जिद बनवाई जो अब मस्जिद नबवी के नाम से प्रसिद्ध है। मस्जिद के निर्माण में हुज़ूर भी लोगों के साथ ईंटें उठा उठाकर लाते और साथ ही यह शेर पढ़ते:

यह बोझ ख़ैबर वाला बोझ नहीं यह तो हमारे रब्ब का अच्छा और पवित्र बताया हुआ काम है। हे मेरे अल्लाह असली इनाम तो अगले जीवन का इनाम है, अंसार और मुहीजिरों पर अपना रहम प्रकट फ़र्मा।

(बुखारी अध्याय हिजरत अल्नबी दूत अली इला मदीना

☆ ☆ ☆
☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad